नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 396, नई दिल्ली, रविवार 05 अप्रैल 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सफलता का कोई छोटा रास्ता नहीं होता, इसके लिए मेहनत की सीढ़ी ही चढ़नी पड़ती है।

03 5 अप्रैल को रखा जाएगा वैशाख संकष्टी चतुर्थी का व्रत, जाने पूरी विधि और महत्व

06 नौकरीपेशा महिलाएं दोहरी जिम्मेदारियों के साथ जीवन की दौड़

08 राजा सरायकेला का भैरव समक्ष ऐतिहासिक पूजा के साथ विश्व प्रसिद्ध सरायकेला

जीपीएस, पैनिक बटन, और हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट बिना नहीं होंगे फिटनेस, पंजीकरण व प्रदूषण

परिवहन विशेष न्यूज

सहारनपुर, संवाददाता। जनपद में सड़क सुरक्षा और प्रदूषण नियंत्रण को लेकर परिवहन विभाग ने सख्ती बढ़ा दी है। अब सार्वजनिक सेवा से जुड़े वाहनों, राष्ट्रीय परमिट वाले वाहनों तथा विशेष श्रेणी के माल परिवहन में लगे वाहनों में जीपीएस आधारित वाहन लोकेशन ट्रैकिंग यंत्र और आपातकालीन सहायता बटन लगाना अनिवार्य कर दिया गया है।

सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी (प्रशासन) मानवेन्द्र प्रताप सिंह ने बताया कि यह व्यवस्था भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के तहत लागू की जा रही है। इसका उद्देश्य वाहनों की निगरानी मजबूत करना और यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। उन्होंने बताया कि बस, टैक्सी सहित अन्य व्यावसायिक वाहन, राष्ट्रीय परमिट से संचालित वाहन तथा विशेष श्रेणी के माल ढोने वाले वाहन इस नियम के दायरे में आएंगे, जबकि दोपहिया, ई-रिक्शा, तिपहिया और बिना परमिट वाले वाहनों को इससे छूट दी गई है।

उन्होंने आगे जानकारी दी कि एक जनवरी 2019 के बाद पंजीकृत सभी संबंधित वाहनों में जीपीएस यंत्र और पैनिक बटन लगाना अनिवार्य है। जिन वाहनों में यह उपकरण नहीं लगे होंगे, उनके पंजीकरण, फिटनेस प्रमाणपत्र तथा अन्य परिवहन संबंधी कार्य नहीं किए जाएंगे।

वहीं आर आई रोहित कुमार ने प्रदूषण को लेकर जानकारी देते हुए बताया कि अब बिना हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट (एचएसआरपी) के वाहनों का प्रदूषण प्रमाणपत्र (पीयूसी) भी नहीं बनाया जाएगा। यदि किसी वाहन में मानक से अधिक प्रदूषण पाया जाता है या आवश्यक दस्तावेज पूरे नहीं होते हैं, तो संबंधित वाहन स्वामी के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने वाहन स्वामियों से सभी आवश्यक मानकों को पूरा करने और समय-समय पर जांच कराने की अपील की। इस व्यवस्था को लागू करने के लिए परिवहन विभाग द्वारा 15 कंपनियों को अधिकृत किया गया है। इनमें एकोलेड इलेक्ट्रॉनिक्स प्राइवेट लिमिटेड, अटलांटा सिस्टम्स प्राइवेट लिमिटेड, ब्लैकबॉक्स जीपीएस टेक्नोलॉजीज, कंटेन टेक्नोलॉजीज, डैनलॉ टेक्नोलॉजीज इंडिया, जीट्रॉपी सिस्टम्स, इंटैगल्स लैब, लुमैक्स इटुरान टेलीमैटिक्स, निप्पॉन ऑडियो ट्रॉनिक्स, रोसमर्टा ऑटोटेक, रोडपॉइंट लिमिटेड, ट्रैकनाउ प्राइवेट लिमिटेड, आईट्रायंगल इन्फोटेक, पीएनवी इलेक्ट्रॉनिक्स एंड आईटी सर्विसेज तथा वाटसू एक्सप्रेस प्राइवेट लिमिटेड शामिल हैं।

इन अधिकृत कंपनियों के माध्यम से ही निर्धारित मानक के उपकरण लगाए जाएंगे।

परिवहन विभाग ने सभी वाहन स्वामियों से अपील की है कि वे अपने वाहनों में शीघ्र जीपीएस यंत्र, पैनिक बटन तथा अन्य आवश्यक मानकों की व्यवस्था सुनिश्चित करें, ताकि सड़क सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण दोनों को मजबूत किया जा सके।

दिल्ली हाफ मैराथन को लेकर 5 अप्रैल को कई मार्गों पर रहेगा डायवर्जन, ट्रैफिक पुलिस ने जारी की

दिल्ली में 5 अप्रैल को होने वाली PNB सॉलिडरेशन दिल्ली हाफ मैराथन के कारण दक्षिण दिल्ली के कई मार्गों पर ट्रैफिक डायवर्ट रहेगा। दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने ...और पढ़ें

नई दिल्ली। दिल्ली में रविवार को जेएलएन स्टेडियम में 'PNB सॉलिडरेशन दिल्ली हाफ मैराथन" का आयोजन होने जा रहा है। सुबह 5:30 बजे से शुरू होने वाले इस इवेंट के कारण दक्षिण दिल्ली के कई प्रमुख रास्तों पर ट्रैफिक को रेगुलेट और डायवर्ट किया जाएगा।

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने ट्रैफिक एडवाइजरी जारी कर बताया कि मेहर चांद मार्केट सिग्नल, कोटला रेड लाइट, सेकंड एवेन्यू रोड-जोर बाग क्रॉसिंग, फोर्थ एवेन्यू रोड-जोर बाग क्रॉसिंग और लाला लाजपत राय कट (CBI बिल्डिंग) पर ट्रैफिक डायवर्ट किया जाएगा। भारी वाहनों की आवाजाही बी.पी. मार्ग और लोधी रोड पर सुबह 5 बजे से 10 बजे तक प्रतिबंधित रहेगी।

ट्रैफिक पुलिस ने बताया कि इन इलाकों में बी.पी. मार्ग, सीजीओ कॉम्प्लेक्स रोड, सेकंड एवेन्यू रोड और फोर्थ एवेन्यू रोड पर भारी जाम की आशंका है। इमरजेंसी वाहनों (एम्बुलेंस, फायर ब्रिगेड, पुलिस आदि) को फ्री पासेज दिया जाएगा, लेकिन उन्हें जहां संभव हो बी.पी. मार्ग और सीजीओ कॉम्प्लेक्स रोड से बचने की सलाह दी गई है।

इन मार्गों पर रहेगा ट्रैफिक डायवर्जन

मेहर चंद मार्केट सिग्नलः सेवा नगर, जोर बाग एवं आईएनए से आने वाले भारी वाहनों को फोर्थ एवेन्यू रोड एवं सेवा नगर मार्केट रोड के रास्ते अरोबिंदो मार्ग की ओर डायवर्ट किया जाएगा।

कोटला रेड लाइटः कोटला मुबारकपुर, डिफेंस कॉलोनी एवं एंड्रयूज गंज से आने वाले ट्रैफिक को डिफेंस कॉलोनी मार्केट रोड की ओर डायवर्ट किया जाएगा।

सेकंड एवेन्यू रोड-जोर बाग क्रॉसिंगः खन्ना मार्केट एवं लोधी कॉलोनी से आने वाले ट्रैफिक को जोर बाग रोड की ओर डायवर्ट किया जाएगा।

फोर्थ एवेन्यू रोड-जोर बाग क्रॉसिंगः सेवा नगर एवं जोर बाग से आने वाले ट्रैफिक को जोर बाग रोड की ओर डायवर्ट किया जाएगा।

लाला लाजपत राय कट (CBI बिल्डिंग): मूलबचंद से आने वाले ट्रैफिक को जेएलएन रोड की ओर बाएं मुड़ने की अनुमति नहीं दी जाएगी और इसे मथुरा रोड के रास्ते दिल्ली चिड़ियाघर की ओर डायवर्ट किया जाएगा।

ट्रैफिक पुलिस ने लोगों से अपील की है कि प्रभावित रूट से बचें, यात्रा की पहले से प्लानिंग करें, रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट या अस्पताल जाने वालों को अतिरिक्त समय रखें और जहां संभव हो पब्लिक ट्रांसपोर्ट का इस्तेमाल करें।

दिल्ली की नई स्लम नीतिः झुग्गियों में बनेंगे शॉपिंग कॉम्प्लेक्स और ई-रिक्शा चार्जिंग स्टेशन

दिल्ली सरकार नई स्लम पुनर्वास नीति तैयार कर रही है, जिसके तहत झुग्गीवासियों को शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, पार्किंग और ई-रिक्शा चार्जिंग पॉइंट जैसी सुविधाएं मिलेंगी। इस नीति में स्कूल और जन सुविधा केंद्र भी शामिल होंगे। यह नीति इस महीने अंतिम रूप लेगी। मौजूदा पात्रता अवधि 10 साल बढ़ाकर 2025 तक की जाएगी।

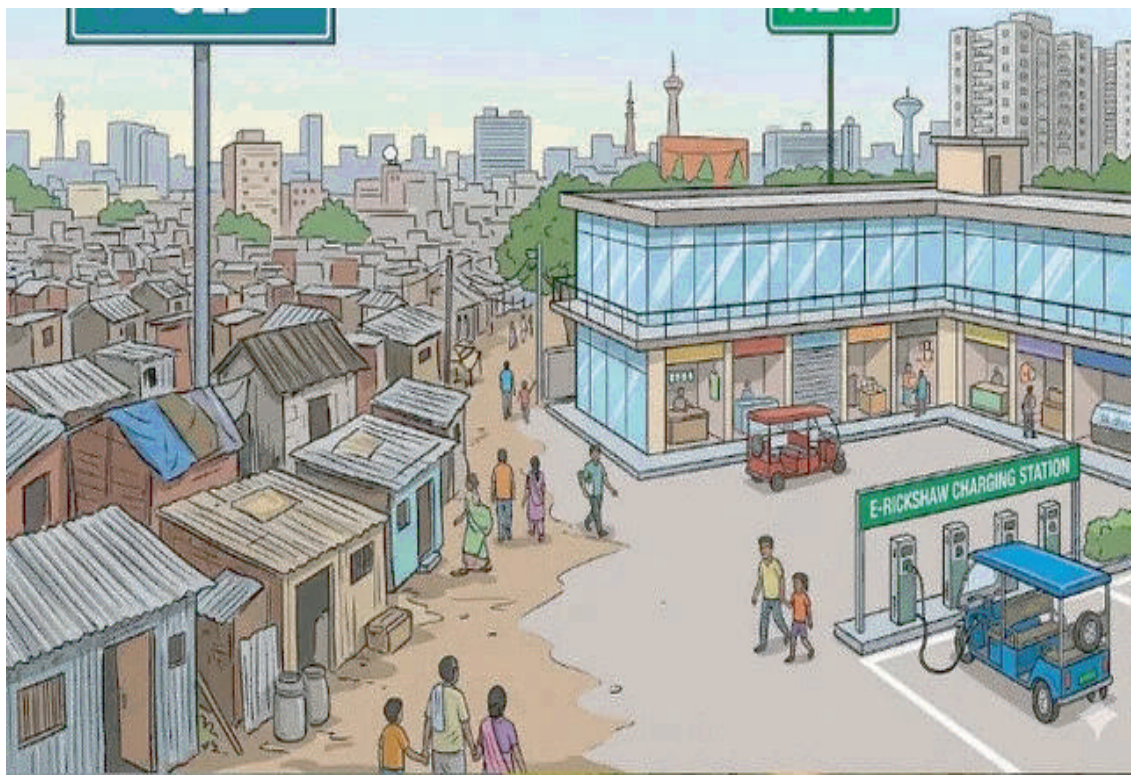

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार तैयार हो रही नई स्लम पुनर्वास नीति के तहत इन इलाकों में रहने वालों को शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, पार्किंग एरिया और ई-रिक्शा चार्जिंग प्वाइंट जैसी सुविधाएं देने की योजना बना रही है।

सरकार की प्रस्तावित नीति के अनुसार जिन सुविधाओं पर विचार किया जा रहा है उनमें स्कूल, जन सुविधा केंद्र आदि की व्यवस्था भी शामिल है। इस नीति की तैयारी अंतिम चरण में है और इस महीने इसे अंतिम रूप दे दिए जाने की संभावना है।

यहां बता दें कि सरकार मौजूदा नीति के तहत लाभार्थियों की पात्रता अवधि 1 जनवरी, 2015 से 10 साल बढ़ाकर 1 जनवरी, 2025 करने की भी योजना बना रही है, जिससे कई स्लम में रहने वाले लोग पक्के घर के लिए अधिक्रत हो सकेंगे। दिल्ली में लगभग 750 स्लम क्लस्टर हैं।

आधी झुग्गियां केंद्र सरकार की एजेंसियों की जमीन पर

इनमें से लगभग आधी झुग्गियां रेलवे, भूमि एवं विकास विभाग (एलएनडीओ) और डीडीए जैसी केंद्र सरकार की एजेंसियों की जमीन पर हैं, जो उनके पुनर्वास के लिए नोडल एजेंसी के तौर पर काम करती हैं। अन्य झुग्गी-झोपड़ियां दिल्ली सरकार की जमीन पर हैं, जहां पुनर्वास की जिम्मेदारी दिल्ली के शहरी विकास विभाग के तहत दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड (डूसिब) करता है।

अभी दिल्ली में झुग्गी-झोपड़ी पुनर्वास का काम दिल्ली स्लम और झुग्गी-झोपड़ी पुनर्वास और पुनर्वास नीति, 2015 के तहत होता है, जो झुग्गियों को उसी जगह पर या झुग्गी वालों को पांच किलोमीटर के दायरे में दूसरी जगह देकर पुनर्वास को प्राथमिकता देती है।

झुग्गी वालों को अब तक आवास नहीं मिल सका

एक झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले को 25 वर्ग मीटर के घर के लिए 1.12 लाख रुपये और पांच साल के लिए रखरखाव के लिए 30,000 रुपये निर्धारित हैं। हालांकि इस नीत के तहत दिल्ली में एक भी झुग्गी वालों को अब तक आवास नहीं मिल सका है। यह नीति शुरू से ही विवादों में आ गई थी। जब उस समय की आप सरकार ने प्रधानमंत्री आवास योजना को दिल्ली में लागू न कर अपनी नीति तैयार कर इसे लागू किया था, जिसे लेकर अड़ंगे ही लगते रहे।

इसी कारण है 2008 से दिल्ली सरकार ने डूसिब और दिल्ली राज्य औद्योगिक एवं ढांचागत विकास निगम (डीएसआइआइडीसी) के जरिए, झुग्गी-झोपड़ी में रहने वालों के पुनर्वास के लिए द्वारका, सुल्तानपुरी, भलस्वा-जहांगीरपुरी, सावदा घेवरा, पूठ खुर्द और टिकरी कलां में बनाए गए 52,584 फ्लैट झुग्गी वालों को आवंटित नहीं हो पाए।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार : भारत में साइबर अपराध मामलों के पंजीकरण में तेज़ वृद्धि

भारत में साइबर अपराध मामलों के पंजीकरण में तेज़ वृद्धि देखी गई है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) ने 2026 में 86,420 मामले दर्ज किए, जो 2021 के 52,974 मामलों से कहीं अधिक हैं। यह वृद्धि वित्तीय धोखाधड़ी, ₹डिजिटल गिरफ्तारी₹ ठगी, फ़िशिंग और सोशल मीडिया के दुरुपयोग से प्रेरित है। यह प्रवृत्ति बढ़ते साइबर खतरों और बेहतर रिपोर्टिंग तंत्र दोनों को दर्शाती है।

प्रमुख आँकड़े

- साइबर अपराध मामले (NCRB 2026): 86,420
- 2021 से वृद्धिः ₹63% (52,974 मामलों से)
- सबसे अधिक शिकायत वाले राज्यः कर्नाटक, दिल्ली, उत्तर प्रदेश
- मुख्य धोखाधड़ी प्रकारः वित्तीय ठगी, डिजिटल गिरफ्तारी धोखाधड़ी, फ़िशिंग, ओटीपी धोखाधड़ी और प्रतिरूपण

वृद्धि के पीछे कारण

1. डिजिटल अपनापन और ऑनलाइन लेन-देन
- UPI, ऑनलाइन बैंकिंग और ई-कॉमर्स के तेज़ विस्तार ने धोखेबाज़ों को अधिक अवसर दिए।
- "डिजिटल इंडिया₹ पहल से लाखों नए उपयोगकर्ता ऑनलाइन आए, जिनमें से कई साइबर जागरूकता से वंचित हैं।

2. वित्तीय ठगी और "डिजिटल गिरफ्तारी" धोखाधड़ी

- अपराधी पुलिस या सरकारी एजेंसियों का रूप धारण कर पीड़ितों से धन स्थानांतरित करवाते हैं।
- 2026 में यह भारत के सबसे बड़े साइबर खतरों में से एक बन गया है।

3. सोशल मीडिया और मैसेजिंग प्लेटफ़ॉर्म

- नकली प्रोफ़ाइल, ₹सेक्सटॉर्शन₹ और गलत सूचना अभियानों में वृद्धि।
- प्लेटफ़ॉर्म पर आसान गुमनामी से पहचान और रोकथाम कठिन हो जाती है।

4. बेहतर रिपोर्टिंग और जागरूकता

- NCRB और राज्य पुलिस ने साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल और हेल्पलाइन को मज़बूत किया।
- जागरूकता अभियानों और सरल शिकायत तंत्र के कारण पीड़ित अब अधिक रिपोर्ट कर रहे हैं।

5. वैश्विक राजनीतिक और तकनीकी कारक

- भू-राजनीतिक तनाव और सीमा-पार साइबर हमलों ने असुरक्षा बढ़ाई।
- AI-आधारित फ़िशिंग और मैलवेयर के विकास ने हमलों को और जटिल बना दिया है।

जोखिम और चुनौतियाँ

- ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता की कमी के कारण अधूरा रिपोर्टिंग अभी भी मौजूद है।
- कानून प्रवर्तन क्षमता सीमित है, साइबर सेल में कौशल और जनशक्ति की कमी है।

ड्ड वित्तीय नुकसान बढ़ रहे हैं, खासकर वरिष्ठ नागरिकों और छोटे व्यवसायों को निशाना बनाया जा रहा है।

सिफ़ारिशें

- हर ज़िले में प्रशिक्षित कर्मियों के साथ साइबर सेल को मज़बूत करें।
- जन-जागरूकता अभियान चलाएँ, विशेषकर UPI सुरक्षा, OTP धोखाधड़ी और डिजिटल गिरफ्तारी ठगी पर।
- बैंकों और टेलीकॉम प्रदाताओं के साथ सहयोग कर संदिग्ध लेन-देन और नंबरों को तुरंत ब्लॉक करें।
- स्कूलों और कार्यस्थलों में अनिवार्य साइबर स्वच्छता शिक्षा लागू करें।

-निष्कर्षः भारत में साइबर अपराध पंजीकरण में वृद्धि डिजिटल धोखाधड़ी और बेहतर रिपोर्टिंग तंत्र दोनों का परिणाम है। वित्तीय ठगी, डिजिटल गिरफ्तारी धोखाधड़ी और फ़िशिंग प्रमुख हैं, जिनमें कर्नाटक, दिल्ली और उत्तर प्रदेश जैसे शहरी राज्यों में शिकायतें सबसे अधिक हैं। यह प्रवृत्ति मज़बूत साइबर पुलिसिंग, जागरूकता अभियानों और प्रणालीगत सुधारों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है।

'डिजिटल डस्टबिन' बनते शरीर और मन को बचाने की चुनौती

उमेश कुमार साहू

हम इतिहास के उस कालखंड में जी रहे हैं जहाँ इंसान ने प्रकृति पर विजय तो पा ली है लेकिन खुद के शरीर से हार रहा है। आज हमारे पास 'स्मार्टवॉच' है जो दिल की धड़कन गिनती है पर हमारे पास उस दिल की बात सुनने का समय नहीं है। हम 5G की रफ़्तार से डेटा तो डाउनलोड कर रहे हैं लेकिन हमारा अपना 'इम्यून सिस्टम' (रोग प्रतिरोधक क्षमता) हर बदलते मौसम के साथ 'हैंग' हो जाता है। 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि यह पूछने का मौका है कि क्या हम वास्तव में 'जी' रहे हैं या सिर्फ 'सर्वाइव' कर रहे हैं?

1. स्वास्थ्य का आधुनिक अर्थ: होलिस्टिक वेलबीइंग

अक्सर हम समझते हैं कि अस्पताल न जाना ही स्वास्थ्य है लेकिन विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की परिभाषा अब और गहरी हो गई है। असली स्वास्थ्य का अर्थ है - शारीरिक क्षमता, मानसिक शांति और सामाजिक संतुलन का संगम।

- **नया नजरिया:**
- यदि आप जिम में 100 किलो वजन उठा लेते हैं लेकिन घर आकर छोटी सी बात पर चिल्लाने लगते हैं तो आप अस्वस्थ हैं। सच्चा आरोग्य वह है जहाँ तन ऊर्जावान हो और मन शांत।

2. सोशल मीडिया और 'डोपामाइन' का जाल

आज की सबसे बड़ी बीमारी वायरस नहीं, बल्कि 'नोटिफिकेशन' है। हम सुबह उठते ही सूरज की पहली किरण के बजाय मोबाइल की नीली रोशनी (Blue Light) देखते हैं।

- दिक्कत: सोशल मीडिया पर दूसरों की 'परफेक्ट लाइफ' देखकर अपने सामान्य जीवन से नफरत करना 'मेंटल करप्शन' है। रील स्क्रॉल करते हुए घंटों बिताना हमारे मस्तिष्क के 'रिवॉर्ड सिस्टम' को खराब कर रहा है।
- समाधान: 'डिजिटल डिटॉक्स' को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं। रात को सोने से 1 घंटे पहले और सुबह उठने के 1 घंटे बाद मोबाइल को 'नो एंट्री' ज़ोन में रखें।

3. 'सिटिंग' (Sitting) है नया स्मोकिंग

विज्ञान कहता है कि लगातार घंटों तक कुर्सी या सोफे पर बैठना उतना ही जानलेवा है जितना कि सिगरेट पीना। हमारी मशीन यानी हमारा शरीर 'चलने' के लिए बना था, 'जमने' के लिए नहीं।

- बायो-हैकिंग: ऑफिस हो या घर, हर 40 मिनट पर 'स्टैंडिंग ब्रेक' लें। लिफ्ट के बजाय सीढ़ियां चुनें। याद रखें, शरीर फिट तो दिमाग भी 'हिट' रहता है।

4. प्लेट का गणित: ₹कैलोरी नहीं, केमिकल गिनें₹

जैसा अन्न, वैसा मनन₹ आज के अल्ट्रा-प्रोसेस्ड युग में सबसे बड़ी चेतावनी है। हम 'फूड' नहीं, 'केमिकल' खा रहे हैं।

- भ्रम: डाइट सोडा या शुगर-फ्री लेबल आपको स्वस्थ नहीं बनाते। पैकेटबंद खाना 'स्लो पॉइजन' है।
- समाधान: अपनी थाली को 'रेनबो डाइट' (इंद्रधनुषी रंग) दें। ताजी सब्जियां, फल और मोटे अनाज को प्राथमिकता दें। जो खाना सीधे खेत से आपकी रसोई तक आता है, वही असली 'सुपरफूड' है।

5. मानसिक स्वास्थ्य: ₹ठीक दिखना₹, ₹ठीक होना₹ नहीं

हम अक्सर शारीरिक चोट पर पट्टी बांधते हैं, लेकिन मन के घावों को 'इग्नोर' करते हैं। स्ट्रेस, एंग्जायटी और डिप्रेशन कोई टैबू नहीं, बल्कि इलाज योग्य बीमारियाँ हैं।

- जरूरी कदम: अकेलेपन को सोशल मीडिया से नहीं, बल्कि वास्तविक रिश्तों से भरें। अपनों से मन की बात साझा करना दुनिया की सबसे बड़ी थेरेपी है। मेडिटेशन के 10 मिनट आपके दिमाग को 'रीबूट' कर देते हैं।

6. स्लीप इकोनॉमी: नींद से समझौता यानी मौत से सौदा

नींद हमारे शरीर का 'रिपेयर सेंटर' है। जब हम सोते हैं, तो हमारा मस्तिष्क यादों को सहेजता है और शरीर विषाक्त पदार्थों (Toxins) को बाहर निकालता है।

- खतरा: 7-8 घंटे की नींद की कमी हमारे इम्यून सिस्टम के 'सॉफ्टवेयर' को करप्ट कर देती है

जिससे कैंसर, डायबिटीज और हृदय रोगों का खतरा बढ़ जाता है। नींद को विलासिता नहीं, निवेश समझें।

7. प्रिवेंटिव हेल्थकेयर: ₹बचाव इलाज से सस्ता है₹

हम गाड़ी की सर्विसिंग समय पर कराते हैं, लेकिन अपने शरीर की नहीं। 30 साल की उम्र के बाद साल में एक बार 'होल बॉडी चेकअप' अनिवार्य है।

- टीकाकरण और जांच: वैक्सीनेशन केवल बच्चों के लिए नहीं है। कई गंभीर बीमारियों से बचाव के लिए वयस्क टीकाकरण और नियमित ब्लड प्रेशर/शुगर की जांच 'लाइफ सेवर' साबित होती है।

8. नशा मुक्त जीवन: आजादी का असली अहसास

तंबाकू, शराब और ड्रग्स केवल फेफड़े या लीवर खराब नहीं करते, ये इंसान की 'विल पावर' (इच्छाशक्ति) को खत्म कर देते हैं। नशा मुक्त जीवन का अर्थ है - अपने जीवन का रिमोट कंट्रोल अपने हाथ में रखना।

9. पर्यावरण और व्यक्तिगत स्वास्थ्य

आप शुद्ध हवा बाजार से नहीं खरीद सकते। प्रदूषण आज की सबसे बड़ी 'साइलेंट किलर' बीमारी है। प्लास्टिक का कम उपयोग और अधिक से अधिक पेड़ लगाना अब 'सोशल वर्क' नहीं, बल्कि 'सेल्फ-डिफेंस' है। यदि प्रकृति स्वस्थ रहेगी, तभी हम सांस ले पाएंगे।

10. जागरूकता और संकल्प: ₹My Health, My Right₹

इस वर्ष का संदेश स्पष्ट है - स्वास्थ्य आपका अधिकार है, लेकिन इसे बनाए रखना आपकी जिम्मेदारी है। कोई भी डॉक्टर आपको तब तक स्वस्थ नहीं रख सकता जब तक आप खुद इसके लिए तैयार न हों।

कल से नहीं, आज से!

स्वास्थ्य कोई 'डेस्टिनेशन' नहीं है जहाँ पहुँच कर आप रुक जाएं, यह एक निरंतर चलने वाली 'यात्रा' है। इस विश्व स्वास्थ्य दिवस पर एक छोटा सा बदलाव करें - शायद एक फल ज्यादा खाना, शायद एक घंटा मोबाइल कम चलाना, या शायद सिर्फ 15 मिनट तेज चलना।

याद रखिये, आपकी सबसे बड़ी संपत्ति आपका बैंक बैलेंस नहीं, बल्कि आपकी 'सांसें' और 'धड़कनें' हैं। जब आप स्वस्थ होते हैं, तो आपके पास हजारों सपने होते हैं, लेकिन जब आप बीमार होते हैं, तो आपके पास सिर्फ एक सपना होता है - स्वस्थ होना।

नाभि में छिपा है हर बीमारी का रामबाण इलाज

पिंकी कुंडू

1. दिल कमजोर : नाभि में सरसों का तेल लगाओ, खून का दौरा तेज होगा।
2. मर्दानगी खत्म : नाभि में बादाम का तेल लगाओ, शुक्राणु मजबूत होंगे।
3. पीरियड में गड़बड़ : तिल का तेल लगाओ, दर्द गायब, हार्मोन बैलेंस
4. डायबिटीज का कहर : तुलसी का डाय तेल लगाओ, ब्लड शुगर कंट्रोल
5. कमर, घुटने दर्द : तिल का तेल लगाओ हड्डियां होगी, लोहे जैसी मजबूत
6. पेट में गैस : हींग का तेल लगाओ
7. सिर दर्द, माइग्रेन :

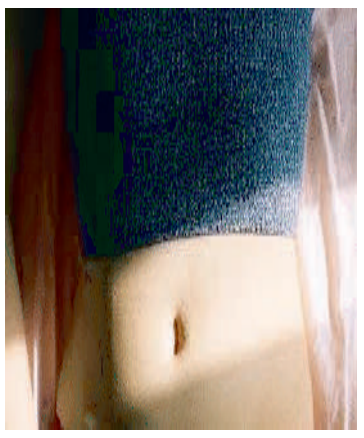

बाज़ार में मिल रहे नकली टूथपेस्ट से सावधान रहें

हाल ही में दिल्ली में एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है, जहाँ अधिकारियों ने बड़ी मात्रा में नकली और मिलावटी टूथपेस्ट जब्त किया, जो अवैध और अत्यंत अस्वच्छ परिस्थितियों में तैयार किया जा रहा था। इन नकली उत्पादों को लोगों को धोखा देने के लिए प्रसिद्ध ब्रांडों के नाम से पैक करके बाज़ार में बेचा जा रहा था।

प्रयोगशाला संबंधी अवलोकनों से यह संकेत मिलता है कि ऐसे नकली टूथपेस्ट में सोडियम लॉरिल सल्फेट (SLS) की मात्रा निर्धारित सीमा से कहीं अधिक हो सकती है, साथ ही कई अन्य अनियमित रसायन, कृत्रिम रंग तथा निम्न-स्तरीय सामग्री भी मिलाई जा सकती है।

सही और मानक के अनुसार बनाए गए टूथपेस्ट में इन पदार्थों की मात्रा को सावधानीपूर्वक नियंत्रित किया जाता है ताकि उपयोगकर्ताओं की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। किंतु नकली उत्पादों में न तो गुणवत्ता का नियंत्रण होता है, न स्वच्छता का पालन और न ही किसी प्रकार की नियामक निगरानी।

अत्यधिक मात्रा में कठोर रासायनिक डिटर्जेंट और अज्ञात रसायनों के संपर्क में आने से मसूड़ों में जलन, मुँह में छाले, मुख की कोमल ऊतकों को क्षति तथा दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

नकली व्यक्तिगत स्वच्छता उत्पादों में अपरीक्षित रसायनों की उपस्थिति विशेष रूप से चिंताजनक है, क्योंकि ये पदार्थ प्रतिदिन सीधे हमारे मुँह के माध्यम से शरीर में प्रवेश करते हैं।

यह घटना इस बात की ओर भी संकेत करती है कि आज के समय में बाज़ार में नकली स्वास्थ्य एवं स्वच्छता उत्पादों का प्रसार एक गंभीर समस्या बनता जा रहा है। कुछ लालची और अनैतिक निर्माता लोकप्रिय ब्रांडों की नकल करके सस्ते दामों पर नकली सामान बेचते हैं, जिससे जनस्वास्थ्य को गंभीर खतरा उत्पन्न होता है।

उपभोक्ताओं को विशेष सावधानी बरतनी चाहिए:

* टूथपेस्ट हमेशा विश्वसनीय दवा दुकानों या भरोसेमंद विक्रेताओं से ही खरीदें।
* पैकेट पर निर्माता का नाम, बैच नंबर और समाप्ति तिथि अवश्य जाँचें।
* जो उत्पाद असामान्य रूप से सस्ते या खराब छपाई वाले प्रतीत हों, उनसे बचें।
* यदि किसी टूथपेस्ट के उपयोग से जलन, असामान्य स्वाद या मुँह में तकलीफ हो, तो तुरंत उसका उपयोग बंद कर दें।

अच्छी मौखिक स्वच्छता समग्र स्वास्थ्य का एक महत्वपूर्ण आधार है। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम केवल प्रमाणित और विश्वसनीय दंत-स्वास्थ्य उत्पादों का ही उपयोग करें।

जनजागरूकता, कठोर नियामक कार्यवाही और जिम्मेदार उपभोक्ता व्यवहार — ये तीनों मिलकर ही नकली उत्पादों के प्रसार को रोक सकते हैं और जनस्वास्थ्य की रक्षा कर सकते हैं।

याद रखें:

एक छोटा-सा टूथपेस्ट का ट्यूब भले ही सामान्य वस्तु लगे, परंतु जो चीज़ हम रोज़ अपने मुँह में उपयोग करते हैं, उसका हमारे दीर्घकालिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

सतर्क रहें। जागरूक रहें। अपने स्वास्थ्य की रक्षा करें।

समर सूप – शरीर को ठंडक देने वाला अमृत!

पिंकी कुंडू

गर्मी का सूप घमौरियों, थकान और गर्मी से होने वाली शरीर की गर्मी को कम करने के लिए बहुत फायदेमंद है। यह न केवल प्यास बुझाता है, बल्कि शरीर को प्राकृतिक ठंडक भी देता है।

सामग्री:

* बेसन – 1 कटोरी
* छाछ – 2 कटोरी (थोड़ा खट्टा हो तो बेहतर)
* पानी – 3–4 कटोरी
* जीरा पाउडर – 1 छोटा चम्मच
* लहसुन – 4–5 कलियाँ (कुटी हुई)
* नमक – स्वादानुसार
* धनिया – थोड़ा सा

रेसिपी (आसान तरीका):

1. बेसन को पानी में मिलाकर 3–4 घंटे (या रात भर) के लिए फरमेंट होने दें,
2. पानी उबालें और उसमें लहसुन और नमक डालें,
3. उसमें आटे का मिक्सचर डालें और लगातार चलाते रहें,
4. गाढ़ा होने पर ठंडा होने दें,
5. फिर छाछ, जीरा पाउडर, धनिया डालकर मिलाएं

फायदे:

1. शरीर को नेचुरल ठंडक
2. पाचन में सुधार
3. पाचन को ठीक रखता है शरीर हाइड्रेटेड रहता है
4. थकान कम करता है और एनर्जी देता है

कब लें?:- सुबह या लंच से पहले

हेल्दी रहने के लिए आज ही सही आदतें अपनाएं!

जनस्वास्थ्य जागरूकता लेख : नकली दवाइयों, कॉस्मेटिक्स और प्रोटीन पाउडर के छिपे हुए खतरे

हाल के वर्षों में देश के विभिन्न भागों से कई चिंताजनक घटनाएँ सामने आई हैं, जिनसे यह पता चलता है कि बाज़ार में नकली दवाइयाँ, मिलावटी कॉस्मेटिक्स और नकली प्रोटीन पाउडर भी उपलब्ध हो सकते हैं।

ये अवैध उत्पाद अक्सर अनियंत्रित और अस्वच्छ वातावरण में तैयार किए जाते हैं और लोगों को धोखा देने के लिए प्रसिद्ध ब्रांडों के नाम से बाज़ार में बेचे जाते हैं।

ऐसे नकली उत्पादों से होने वाले स्वास्थ्य जोखिम अत्यंत गंभीर हो सकते हैं।

नकली दवाइयों में गलत तत्व, बहुत कम या बहुत अधिक मात्रा में दवा, या कभी-कभी बिल्कुल भी सक्रिय औषधीय तत्व नहीं होता। इसके परिणामस्वरूप संक्रमण, हृदय रोग, मधुमेह या अन्य बीमारियों से पीड़ित रोगियों को सही उपचार नहीं मिल पाता, जिससे उनकी बीमारी और गंभीर हो सकती है तथा कई बार जीवन के लिए भी खतरा उत्पन्न हो सकता है।

इसी प्रकार नकली कॉस्मेटिक्स और व्यक्तिगत देखभाल उत्पादों में हानिकारक रसायन, विषैले रंग, भारी धातुएँ या निम्न गुणवत्ता के औद्योगिक पदार्थ मिलाए जा सकते हैं। क्योंकि ये उत्पाद सीधे त्वचा, बालों या मुँह पर उपयोग किए जाते हैं, इसलिए वे एलर्जी, त्वचा को नुकसान, हार्मोनल असंतुलन और दीर्घकालिक विषाक्त प्रभाव पैदा कर सकते हैं।

एक और तेजी से बढ़ती चिंता नकली प्रोटीन पाउडर और पोषण सप्लीमेंट्स की उपलब्धता है। आजकल फिटनेस और बॉडीबिल्डिंग के बढ़ते प्रचलन के कारण इन उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है। दुर्भाग्यवश, कुछ अनैतिक निर्माता इस मांग का फायदा उठाकर स्टार्च, आटा, कृत्रिम फ्लेवर या अन्य सस्ते और कभी-कभी हानिकारक पदार्थों से भरे नकली सप्लीमेंट्स को असली प्रोटीन के नाम पर बेच देते हैं।

ऐसे मिलावटी सप्लीमेंट्स का नियमित सेवन किडनी पर दबाव, लिवर को नुकसान, मेटाबॉलिक विकार और पोषण असंतुलन जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ पैदा कर सकता है।

एक और तेजी से बढ़ती चिंता नकली प्रोटीन पाउडर और पोषण सप्लीमेंट्स की उपलब्धता है। आजकल फिटनेस और बॉडीबिल्डिंग के बढ़ते प्रचलन के कारण इन उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है। दुर्भाग्यवश, कुछ अनैतिक निर्माता इस मांग का फायदा उठाकर स्टार्च, आटा, कृत्रिम फ्लेवर या अन्य सस्ते और कभी-कभी हानिकारक पदार्थों से भरे नकली सप्लीमेंट्स को असली प्रोटीन के नाम पर बेच देते हैं।

ये घटनाएँ एक महत्वपूर्ण सच्चाई को उजागर करती हैं कि स्वास्थ्य से जुड़े उत्पादों का बाजार पूरी तरह धोखाधड़ी और अनैतिक गतिविधियों से मुक्त नहीं है। कुछ आपराधिक नेटवर्क प्रसिद्ध ब्रांडों की नकल करके कम कीमत पर नकली उत्पाद बेचते हैं और उपभोक्ताओं को आकर्षित करते हैं।

उचित जागरूकता के अभाव में कई उपभोक्ता अनजाने में ही गंभीर स्वास्थ्य जोखिमों के संपर्क में आ जाते हैं।

इसलिए उपभोक्ताओं को विशेष सावधानी बरतनी चाहिए:

* दवाइयाँ हमेशा लाइसेंस प्राप्त मेडिकल स्टोर या अधिकृत फार्मेसी से ही खरीदें।
* कॉस्मेटिक्स और सप्लीमेंट्स केवल विश्वसनीय और प्रतिष्ठित विक्रेताओं से ही खरीदें।
* पैकेट पर निर्माता का नाम, बैच नंबर, पैकेजिंग की गुणवत्ता और समाप्ति तिथि अवश्य जाँचें।
* जो उत्पाद असामान्य रूप से सस्ते या संदिग्ध प्रतीत हों, उनसे बचें।
* यदि किसी उत्पाद के उपयोग से अचानक कोई दुष्प्रभाव या असुविधा महसूस हो, तो उसका उपयोग तुरंत बंद कर दें और योग्य चिकित्सक से परामर्श लें।

नकली स्वास्थ्य उत्पादों के प्रसार को रोकने के लिए कड़े नियामक नियंत्रण, सख्त गुणवत्ता परीक्षण और सतर्क कानून-प्रवर्तन कार्यवाही अत्यंत आवश्यक हैं। इसके साथ-साथ जनजागरूकता भी समाज को इन छिपे हुए खतरों से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

याद रखें:

स्वास्थ्य जीवन की सबसे बहुमूल्य संपत्ति है। दवाइयाँ, व्यक्तिगत देखभाल के उत्पाद और पोषण सप्लीमेंट्स कभी भी लापरवाही से नहीं खरीदने चाहिए।

सिर्फ प्रमाणित, असली और विश्वसनीय उत्पादों का चयन करना केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि अपने स्वास्थ्य और अपने परिवार की सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण कदम है।

जागरूक रहें। सतर्क रहें। अपने और अपने परिवार के स्वास्थ्य की रक्षा करें।

आपका शरीर जो कुछ भी करता है, वह हमेशा अच्छा होता है

म्यूकस ⟶ टॉक्सिन को फंसाना।
बुखार ⟶ पैथोजन्स को मारना।
ट्यूमर ⟶ टॉक्सिन/पैथोजन्स के लिए जेल।
खांसी आपके एयरवे को साफ करना।
सूजन ⟶ इम्यून सेल्स को ठीक करने के लिए पानी भरना।
डायरिया ⟶ टॉक्सिन और पैथोजन्स को बाहर निकालना।
दर्द ⟶ आपको और नुकसान से बचाना।
थकान ⟶ आराम करने के लिए मजबूर करना ताकि आपका शरीर लड़ सके।
वायरस ⟶ कचरे के थैले जो सेल्स से टॉक्सिन बाहर निकालते हैं।
क्रेविंग ⟶ न्यूट्रिएंट्स की ज़रूरतों का मैसेज देना, नैतिक नाकामियों का नहीं।
कोलेस्ट्रॉल ⟶ एक्सक्रीशन के लिए टॉक्सिन से जुड़ता है, सेल्स को रिपेयर करता है।
वज़न बढ़ना ⟶ जो आपका शरीर सुरक्षित रूप से बाहर नहीं निकाल सकता उसे स्टोर करना।
ब्रेन फॉग ⟶ एक संकेत कि आपका शरीर बहुत ज़्यादा काम कर

रहा है और एनर्जी को दूसरी जगह भेज रहा है।
स्किन ब्रेकआउट ⟶ जब लिवर ओवरलोड हो तो स्किन के ज़रिए डिटॉक्स करना।
लिम्फ नोड में सूजन ⟶ जो आपका शरीर नहीं चाहता उसे फैलने से रोकना और गहरी रुकावटों को रोकना।
हाइपोथायरायड ⟶ आपके एड्रिनल ग्लैंड चीख रहे हैं, इसलिए आपका थायरॉइड बंद हो जाता है।
कब्ज़ ⟶ आपको अपच या टॉक्सिन से बचाने के लिए रुकना।
डिप्रेशन ⟶ ऐसे माहौल से दूर हो जाना जो आपको पोषण नहीं दे रहा है।
सूजन ⟶ टॉक्सिन को साफ़ करना और इन्फेक्टेड टिशू को ठीक करना।
ऑटोइम्यूनिटी ⟶ आपके लीकी गट से इन्फेक्टेड सेल्स को साफ़ करना।
फंगस ⟶ टॉक्सिन को आपके ब्लडस्ट्रीम में जाने से पहले एब्ज़ॉर्ब करना।
एच. पाइलोरी ⟶ आपके पेट का कम एसिड जो खाना नहीं पचा सकता, उसे और कौन पचाएगा?
पैरासाइट्स ⟶ जो आप प्रोसेस नहीं कर सकते उसे खाना: टॉक्सिन्स, फफूंद, केमिकल के बचे हुए हिस्से, बिना पचा खाना, बायोफिल्म्स, वेस्ट, शुगर। साथ ही यीस्ट, बैक्टीरिया को बैलेंस करना, शायद ऑटोइम्यून रिएक्टिविटी को शांत करना।

5 अप्रैल को रखा जाएगा वैशाख संकष्टी चतुर्थी का व्रत, जाने पूरी विधि और महत्व

ज्योतिषाचार्या एवं टैरो कार्ड रीडर नीतिका शर्मा ने बताया कि 5 अप्रैल को विकट संकष्टी चतुर्थी का व्रत रखा जाएगा। इस दिन भगवान गणेश की पूजा-अर्चना की जाती है। साथ ही संकष्टी चतुर्थी के दिन व्रत करने का भी विधान है।

हिंदू धर्म में भगवान गणेश को प्रथम पूज्य और विघ्नहर्ता माना गया है। प्रत्येक महीने के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को संकष्टी चतुर्थी का व्रत रखा जाता है। वैशाख माह के कृष्ण पक्ष में आने वाली चतुर्थी को विकट संकष्टी चतुर्थी के नाम से जाना जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन व्रत रखने और विधि-विधान से पूजन करने से जीवन के कठिन से कठिन संकट दूर हो जाते हैं और भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। श्री लक्ष्मीनारायण एस्ट्रो सॉल्यूशन अजमेर की निदेशिका ज्योतिषाचार्या एवं टैरो कार्ड रीडर नीतिका शर्मा ने बताया कि 5 अप्रैल को विकट संकष्टी चतुर्थी का व्रत रखा जाएगा। इस दिन भगवान गणेश की पूजा-अर्चना की जाती है। साथ ही संकष्टी चतुर्थी के दिन व्रत करने का भी विधान है। ऐसा करने से घर में सुख-समृद्धि और संपन्नता बनी रहती है। प्रत्येक महीने के कृष्ण और शुक्ल और दोनों पक्षों की चतुर्थी को भगवान गणेश की विधान है। कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी और शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को विनायकी श्री गणेश चतुर्थी का व्रत रखा जाता है। हर महीने में आने वाली संकष्टी और विनायक गणेश चतुर्थी को अलग-अलग नामों से जाना जाता है। वैशाख कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को आने वाली संकष्टी चतुर्थी को विकट संकष्टी चतुर्थी के नाम से जाना जाता है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान गणेश को समर्पित संकष्टी चतुर्थी का व्रत हर महीने रखा जाता है, लेकिन वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी का विशेष महत्व होता है, जिसे विकट संकष्टी चतुर्थी के नाम से जाना जाता है। हिंदू धर्म में भगवान गणेश को विघ्नहर्ता और प्रथम पूज्य देवता माना जाता है। उनकी कृपा शुभ-मांगलिक कार्यों में आ रही बाधाएं दूर करती हैं। साथ ही व्यक्ति को सफलता भी मिलती हैं। लेकिन गणेश जी का विशेष आशीर्वाद पाने के लिए विकट संकष्टी चतुर्थी का व्रत बेहद प्रभावशाली माना जाता है। पंचांग के अनुसार, हर साल वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि पर विकट संकष्टी चतुर्थी मनाई जाती है। इस दिन भगवान गणेश का विशेष रूप से पूजन किया जाता है, जिससे जीवन में आने वाली सभी बाधाएं दूर होती हैं। यही नहीं साधक को कठिन परिस्थितियों से मुक्ति भी प्राप्त होती हैं।

शुभ मुहूर्त

पंचांग के अनुसार, वैशाख कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि का आरंभ 5 अप्रैल 2026 को सुबह 11:59 मिनट पर होगा। चतुर्थी तिथि का समापन 6 अप्रैल को दोपहर 2:10 मिनट पर होगा। उदयातिथि और चंद्रोदय के मुताबिक, 5 अप्रैल 2026 को विकट संकष्टी चतुर्थी का व्रत रखा जाएगा।

चंद्रोदय का समय

विकट संकष्टी चतुर्थी के दिन चंद्रोदय का समय रात 9:54 मिनट पर रहेगा। आपको बता दें कि संकष्टी चतुर्थी व्रत का पारण चंद्रोदय के समय ही किया जाता है।

विकट संकष्टी चतुर्थी व्रत महत्व

भगवान गणेश के अष्टविनायक रूपों में से एक विकट रूप भी है। समस्त प्रकार के ज्ञात-अज्ञात भय, रोग, शोक एवं दुर्घटनाओं से मुक्ति हेतु भगवान विकट की पूजा की जाती है। भगवान विकट अपने भक्तों को अपराजेयता एवं निर्भयता प्रदान करते हैं और घोर से घोर महासंकटों में भक्तों की रक्षा करते हैं।

चारधाम मार्ग पर अब रात 10 बजे के बाद थमेगा पहियों का शोर, यात्रियों की सुरक्षा के लिए बदले नियम

उत्तराखंड में आगामी 19 अप्रैल 2026 से शुरू हो रही चारधाम यात्रा के लिए प्रशासन ने नए और सख्त गाइडलाइंस लागू किए हैं। पहाड़ी रास्तों पर होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने के लिए अब वाहनों के संचालन के समय में बदलाव किया गया है।

क्या हैं नए नियम?

रात्रि प्रतिबंधः यात्रा मार्गों पर रात 10:00 बजे से सुबह 04:00 बजे के बीच वाहनों के चलने पर पूर्ण पाबंदी रहेगी। कुछ विशेष संवेदनशील मार्गों पर यह प्रतिबंध शाम 08:00 बजे से भी लागू हो सकता है।

ग्रीन कार्ड अनिवार्यः किसी भी व्यावसायिक वाहन को बिना ग्रीन कार्ड के ऋषिकेश से आगे जाने की अनुमति नहीं होगी। यह कार्ड वाहन की फिटनेस और ड्राइवर के दस्तावेजों की जांच के बाद ही जारी किया जा रहा है।

ट्रैकिंग और जीपीएसः सरकार यात्रियों की सुरक्षा के लिए मोबाइल जीपीएस के जरिए वाहनों की लोकेशन ट्रैक करेगी ताकि आपात स्थिति में तुरंत मदद पहुंचाई जा सके।

क्यों लिया गया यह फैसला?

दुर्घटनाओं पर लगामः रात के समय पहाड़ों पर Visibility कम हो जाती है और जंगली जानवरों का खतरा भी बना रहता है।

ड्राइवरों को आरामः लगातार ड्राइविंग से होने वाली थकान के कारण होने वाले हादसों को कम करने के लिए यह अनिवार्य विश्राम समय तय किया गया है।

जाम से मुक्तिः सुबह-सुबह ट्रैफिक को व्यवस्थित तरीके से छोड़ने के लिए चेक पोस्ट पर भीड़ को नियंत्रित करना आसान होगा।

इन बसों के प्रवेश पर रहेगी रोक

ऐसी बसें जिनकी चौड़ाई 2570 मिलीमीटर से ज्यादा है या जिनका व्हील बेस (पहियों के बीच की दूरी) 4500 मिलीमीटर से अधिक है, उन्हें पहाड़ी मार्गों पर जाने की अनुमति नहीं होगी। इन मानकों से बड़े वाहनों को हरिद्वार या ऋषिकेश के पार्किंग स्थलों पर ही रोक दिया जाएगा। बड़े वाहनों से आने वाले यात्रियों को ऋषिकेश से छोटी बसों या टैक्सियों के माध्यम से आगे की यात्रा पूरी करनी होगी।

ड्राइवरों के लिए अनिवार्य कोड ऑफ कंडक्ट

ड्रेस कोड और सुरक्षाः वाहन चलाते समय चालक के लिए जूते पहनना अनिवार्य है (चप्पल या सैंडल पहनकर गाड़ी चलाने की अनुमति नहीं होगी)।

स्वास्थ्य परीक्षणः केवल उन्हीं चालकों को स्टेयरिंग संभालने दिया जाएगा जिनके पास वैध मेडिकल फिटनेस सर्टिफिकेट होगा।

मार्ग का ज्ञान (Training): मैदानी इलाकों या अन्य राज्यों से आने वाले बाहरी चालकों को सीधे पहाड़ों पर जाने की इजाजत नहीं मिलेगी। उन्हें पहले पहाड़ी रास्तों का विशेष प्रशिक्षण (Route Orientation) लेना होगा।

अनुभव को प्राथमिकताः यात्रा मार्ग पर केवल उन्हीं ड्राइवरों को अनुमति दी जाएगी जिनके पास पहाड़ी ढलानों और घुमावदार रास्तों पर गाड़ी चलाने का पर्याप्त अनुभव है।

अब नए समय पर होंगे बाबा श्याम के दर्शन, गर्मी को देखते हुए आरती के समय में हुआ बदलाव

राजस्थान के सुप्रसिद्ध धार्मिक स्थल खाटूश्यामजी मंदिर में दर्शन की व्यवस्थाओं में बड़ा फेरबदल किया गया है। अप्रैल महीने की शुरुआत और बढ़ती गर्मी के मद्देनजर बाबा श्याम की विभिन्न आरतियों के समय को संशोधित किया गया है।

राजस्थान के सुप्रसिद्ध धार्मिक स्थल खाटूश्यामजी मंदिर में दर्शन की व्यवस्थाओं में बड़ा फेरबदल किया गया है। अप्रैल महीने की शुरुआत और बढ़ती गर्मी के मद्देनजर बाबा श्याम की विभिन्न आरतियों के समय को संशोधित किया गया है। अब श्रद्धालु बदले हुए समय के अनुसार ही मंदिर में हाजिरी लगा पाएंगे।

आरती का नया समय (Summer Schedule 2026)

मंदिर प्रशासन के अनुसार, गर्मियों के इस शेड्यूल में सुबह की आरती को जल्दी और रात की आरती को थोड़ा देरी से तय किया गया हैः

मंगला आरतीः बाबा श्याम की पहली आरती अब तड़के सुबह 04:30 बजे होगी।

शृंगार आरतीः बाबा का भव्य शृंगार देखने के लिए अब भक्तों को सुबह 07:15 बजे (कुछ विशेष दिनों में 07:30 बजे) मौजूद रहना होगा।

भोग आरतीः दोपहर के समय लगने वाला विशेष भोग अब 12:30 बजे लगाया जाएगा।

संध्या आरतीः शाम की आरती का समय बदलकर अब 07:15 से 07:30 बजे के बीच कर दिया गया है।

शयन आरतीः रात को बाबा को विश्राम कराने वाली शयन आरती अब रात्रि 10:00 बजे संपन्न होगी।

दर्शन प्रेमियों के लिए विशेष सूचना

गर्मियों के दौरान मंदिर के कपाट दोपहर में कुछ समय के लिए विश्राम हेतु बंद किए जाते हैं।

सुबह के दर्शनः 04:30 बजे से दोपहर 12:30 बजे तक।

शाम के दर्शनः शाम 04:00 बजे से रात 10:00 बजे तक।

एकादशी और विशेष उत्सवों के मौके पर मंदिर के पट 24 घंटे खुले रहते हैं, लेकिन सामान्य दिनों में भक्तों को इसी नए समय का पालन करना होगा।

बांके बिहारी मंदिर में समिति और सेवायत के बीच बड़ा विवाद, जानें क्यों इस बार नहीं सजा फूल बंगला

चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी से शुरू होने वाला विश्व प्रसिद्ध 'फूल बंगला' उत्सव इस बार विवादों की भेंट चढ़ता नजर आ रहा है।

चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी से शुरू होने वाला विश्व प्रसिद्ध 'फूल बंगला' उत्सव इस बार विवादों की भेंट चढ़ता नजर आ रहा है। मंदिर की हाई-पावर मैनेजमेंट कमेटी और सेवायत गोस्वामियों के बीच ठनी रार ने करोड़ों भक्तों को मायूस कर दिया है।

विवाद की असली जड़: 15 हजार बनाम 1.51 लाख

इस साल विवाद का मुख्य कारण फूल बंगला सजाने के लिए तय की गई सहयोग राशि है। मंदिर प्रबंधन समिति ने इस वर्ष फूल बंगला सजाने के लिए रसीद की राशि को सीधे 15,000 रुपये से बढ़ाकर 1.51 लाख रुपये कर दिया है। प्रबंधन का कहना है कि सेवायत भक्तों से लाखों रुपये लेते हैं, जबकि मंदिर कोष में मात्र 15 हजार रुपये जमा होते हैं।

मंदिर के विकास और व्यवस्थाओं के लिए इस राशि को बढ़ाना जरूरी है। सेवायत गोस्वामियों का तर्क है कि यह वृद्धि बहुत अधिक है और सदियों से चली आ रही परंपरा में प्रशासनिक दखलअंदाजी है। उनका कहना है कि इतनी मोटी रकम हर कोई वहन नहीं कर सकता, जिससे यह सेवा केवल अमीरों तक सीमित रह जाएगी।

परंपरा पर पड़ा असर

आमतौर पर 29 मार्च से बांके बिहारी मंदिर में फूल बंगलों का सजना शुरू हो जाता है, जो अगले 137 दिनों तक चलता है। लेकिन इस बार नियमों की सख्ती और फीस वृद्धि के विरोध में कई सेवायतों ने बुकिंग लेने से हाथ खींच लिए हैं। मंदिर का वह आंगन जो फूलों की खुशबू और भव्य सजावट से महकता था, वहां इस बार वह रौनक गायब है।

एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप

मंदिर परिसर में इस समय तनाव का माहौल है। जहाँ एक ओर प्रबंधन समिति पारदर्शिता और मंदिर की आय बढ़ाने की बात कर रही है, वहीं सेवायत इसे अपने धार्मिक अधिकारों का हनन बता रहे हैं। दोनों पक्ष एक-दूसरे पर "ठीकरा फोड़" रहे हैंः

सेवायतः "समिति के तानाशाही रवैये के कारण उत्सव की गरिमा खत्म हो रही है।"

समितिः "सेवायत पारदर्शिता नहीं चाहते और निजी स्वार्थ के लिए परंपरा को रोक रहे हैं।"

भक्तों की बढ़ी मायूसी

दूर-दराज से आने वाले श्रद्धालु, जो भीषण गर्मी में ठाकुर जी को फूलों के शीतल बंगले में विराजमान देखने आते हैं, वे इस खींचतान से सबसे ज्यादा दुखी हैं। वृंदावन आने वाले पर्यटकों की संख्या पर भी इसका असर पड़ने की आशंका है।

घर में कंगाली आने से पहले मिलते हैं ये संकेत, समय रहते पहचानें वरना बढ़ सकती हैं आर्थिक परेशानियां

वास्तु शास्त्र को भारतीय परंपरा में जीवन को संतुलित और समृद्ध बनाने वाला महत्वपूर्ण विज्ञान माना गया है। इसमें घर, दिशा, ऊर्जा और दैनिक आदतों से जुड़े ऐसे नियम बताए गए हैं, जो व्यक्ति के जीवन पर सीधा प्रभाव डालते हैं।

वास्तु शास्त्र को भारतीय परंपरा में जीवन को संतुलित और समृद्ध बनाने वाला महत्वपूर्ण विज्ञान माना गया है। इसमें घर, दिशा, ऊर्जा और दैनिक आदतों से जुड़े ऐसे नियम बताए गए हैं, जो व्यक्ति के जीवन पर सीधा प्रभाव डालते हैं। वास्तु के अनुसार, जब किसी व्यक्ति या परिवार पर आर्थिक संकट आने वाला होता है, तो उससे पहले कुछ संकेत मिलने लगते हैं। अक्सर लोग इन संकेतों को नजरअंदाज कर देते हैं, जिससे आगे चलकर आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है।

ऐसे में जरूरी है कि इन संकेतों को समय रहते पहचान लिया जाए, ताकि नुकसान से बचा जा सके। आइए विस्तार से जानते हैं उन संकेतों के बारे में, जो घर में कंगाली आने का इशारा करते हैं।

कंगाली आने से पहले मिलने वाले प्रमुख संकेत

नल से लगातार पानी टपकना

घर के नल से पानी का लगातार टपकना सामान्य समस्या लग सकती है, लेकिन वास्तु शास्त्र में इसे गंभीर संकेत माना गया है। यह दर्शाता है कि घर में धन का अपव्यय हो रहा है और कर्ज बढ़ सकता है। ऐसे में तुरंत नल को ठीक कराना चाहिए, ताकि आर्थिक नुकसान को रोका जा सके।

घर में बार-बार कांच का टूटना

यदि घर में शीशा, ग्लास या अन्य कांच की चीजें बार-बार टूटने लगें, तो यह नकारात्मक ऊर्जा के बढ़ने का संकेत है। यह स्थिति परिवार के सदस्यों के बीच तनाव और आर्थिक समस्याओं को जन्म दे सकती है।

परिवार में लगातार झगड़े होना

वास्तु के अनुसार, जिस घर में बार-बार बिना कारण झगड़े होते हैं, वहां सकारात्मक ऊर्जा कम हो जाती है। इसका सीधा असर आर्थिक स्थिति पर पड़ता है और धीरे-धीरे धन की कमी होने लगती है।

आभूषणों का बार-बार खो जाना

यदि घर में सोने या चांदी के आभूषण बार-बार खोने लगें, तो इसे भी आर्थिक नुकसान का संकेत माना जाता है। यह दर्शाता है कि घर में लक्ष्मी स्थिर नहीं हैं।

पैसे का हाथ में न टिकना

कई बार लोग अच्छी कमाई करते हैं, लेकिन फिर भी उनके पास पैसा नहीं बचता। वास्तु के अनुसार, यह भी आर्थिक अस्थिरता और आने वाली कंगाली का संकेत हो सकता है।

घर में लाल चींटियों का दिखना

घर में लाल चींटियों का अचानक बढ़ जाना भी शुभ नहीं माना जाता। यह संकेत देता है कि आने वाले समय में कर्ज या खर्च बढ़ सकता है।

क्या करें? (वास्तु अनुसार उपाय)

घर में साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें।

टूटे हुए सामान को तुरंत हटा दें।

जल से संबंधित लीकेज तुरंत ठीक करवाएं।

रोजाना पूजा-पाठ और सकारात्मक वातावरण बनाए रखें।

तुलसी के पौधे की नियमित देखभाल करें।

वास्तु शास्त्र के अनुसार, प्रकृति और घर का वातावरण हमें पहले ही संकेत दे देता है कि आगे क्या होने वाला है। जरूरत है उन संकेतों को समझने और समय रहते सही कदम उठाने की। यदि इन बातों का ध्यान रखा जाए, तो बड़े आर्थिक संकट से बचा जा सकता है और घर में सुख-समृद्धि बनाए रखी जा सकती है।

खातीवास -खेड़ी गांवों से मेरा पारिवारिक रिश्ता : आरती सिंह राव

हरियाणा की स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा एवं आयुष मंत्री आरती सिंह राव ने गांव खातीवास में ग्रामीणों से किया सीधा संवाद

सरकार ग्रामीण विकास के लिए कटिबद्ध - बोलीं स्वास्थ्य मंत्री
खातीवास व खेड़ी गांवों के विकास के लिए दस-दस लाख रुपए देने की घोषणा

झज्जर, 4 अप्रैल। हरियाणा की स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा एवं आयुष मंत्री आरती सिंह राव ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में सरकार ग्रामीण विकास के लिए कटिबद्ध है। प्राथमिकता के आधार पर विकास कार्यों को मूर्त रूप दिया जा रहा है। खेड़ी व खातीवास गांव उनके अपने गांव हैं दोनों गांवों से उनका पारिवारिक रिश्ता है, जब भी मदद की जरूरत पड़ी, यहां के लोगों ने दिल खोलकर मदद की है, दोनों गांवों के विकास के मामले कोई कमी नहीं रहने दी जाएगी। उन्होंने खातीवास व खेड़ी गांवों के विकास के लिए दस-दस लाख रुपए देने की घोषणा की।

कैबिनेट मंत्री आरती सिंह राव शनिवार को निकटवर्ती गांव खातीवास में दादा सिराज वाला मंदिर में आयोजित अभिनंदन समारोह में ग्रामीण सभा को संबोधित कर रही थीं। कार्यक्रम में पहुंचने पर कैबिनेट मंत्री का ग्राम पंचायत ने फूल मालाओं व पुष्पहार से स्वागत किया। उन्होंने कहा कि खेड़ी खातीवास गांवों के ग्रामीणों ने जो मान सम्मान दिया है वे कभी नहीं भूल पाएंगी। चूंकि इन गांवों से मेरा वर्षों पुराना पारिवारिक जुड़ाव भी है। आप सभी के सहयोग व आर्शीवाद से मुझे अटेली से विधायक और राज्य सरकार में बतौर कैबिनेट मंत्री बनकर प्रदेश की सेवा करने का मौका मिला है।

उन्होंने कहा कि पूर्व की सरकारों ने विकास के मामले में इस क्षेत्र की निरन्तर अनदेखी की। लेकिन वर्तमान केंद्र और प्रदेश सरकार द्वारा विकास कार्यों को निरंतर बढ़ावा दिया जा रहा है। सरकार की सोच है कि प्रदेश में एक समान विकास को बढ़ावा दिया जाए, जिसके चलते सरकार जनभावनाओं के अनुरूप विकास कार्य करवा रही है।

उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायत खेड़ी व खातीवास की तरफ से जो मांग पत्र मिला है, उनमें अधिकांश मांगों को पूरा कराने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि पानी निकासी के लिए जो पाइप लाइन का काम है, उसको जल्द से जल्द पूरा करवाया जाएगा।

कैबिनेट मंत्री आरती सिंह राव ने कहा कि उनके लिए यह सौभाग्य की बात है कि उन्हें इस क्षेत्र का प्रभारी बनाया गया है। क्षेत्र के लोग किसी भी जनहित के कार्यों को लेकर उनसे कभी भी मिल सकते हैं।

उन्होंने कहा कि प्रदेश के सभी अस्पतालों में सरकार की तरफ से एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड, सीटी स्कैन, एमआरआई आदि मशीनें और एक्सपर्ट स्टाफ लगाया गया है। आयुष्मान योजना के तहत भी लोगों को अच्छा लाभ मिल रहा है। सरकार सभी क्षेत्रों और वर्गों को ध्यान में रखते हुए विकास कार्यों को गति प्रदान कर रही है। उन्होंने बताया कि सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं को मजबूत करने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। लोगों को बेहतर इलाज, दवाइयों की उपलब्धता और समय पर स्वास्थ्य सेवाएं मिलें, यह सरकार की प्राथमिकता है। कैबिनेट मंत्री ने कहा कि प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं को सुदृढ़ करने के लिए अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं, जिनका आमजन को पूरा लाभ मिल रहा है।

उन्होंने आमजन से सरकार की योजनाओं और सेवाओं का लाभ उठाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर जिला परिषद के चेयरमैन कप्तान सिंह बिरधाना ने कैबिनेट मंत्री का स्वागत करते हुए कहा कि सरकार अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचाने का कार्य कर रही है। उन्होंने आश्वासन दिया कि ग्रामीणों के उत्थान के लिए जिला परिषद झज्जर भी पूरा सहयोग करेगी।

भाजपा जिलाध्यक्ष विकास वाल्मिकी ने कैबिनेट मंत्री का झज्जर पहुंचने पर स्वागत किया। उन्होंने आमजन से सरकार की योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया।

समारोह में यह गणमान्य व्यक्ति रहे मौजूद

इस अवसर पर गांव खातीवास सरपंच सुशीला देवी, भाजपा महिला मोर्चा की जिला अध्यक्ष सोमवती जाखड़, अमित जून, समाजसेवी रमेश कुमार, संस्कारम ग्रुप के चेयरमैन डॉ महिपाल यादव, पूर्व कुलपति जेपी यादव, रेवाड़ी जिला परिषद के चेयरमैन मनोज यादव, अनिल रायपुर, विकास बडख़ोदा, झज्जर यादव महासभा के अध्यक्ष रामौतार यादव, मार्किट कमेटी झज्जर के चेयरमैन सतबीर यादव, अजय पटौदा, जहाजगढ़ के सरपंच प्रतिनिधि उदय सिंह, पलड़ा के सरपंच रामनिवास, एक्स सर्विस मेन लीग के जिला अध्यक्ष सूबेदार सुरेंद्र सिंह यादव के अलावा जिला प्रशासन की ओर से एसडीएम झज्जर रवि मीणा, एसीपी शमशेर सिंह, दिनेश कुमार, सिविल सर्जन डॉ. मंजू कादयान, आयुष अधिकारी डॉ. पवन देशवाल, डॉ. बिजेंद्र गुप्ता सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी व क्षेत्र के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री तीर्थ यात्रा योजना: श्री हजूर साहिब नांदेड़ की निःशुल्क यात्रा के लिए वरिष्ठ नागरिक 15 अप्रैल तक करें सरल पोर्टल पर पंजीकरण

परिवहन विशेष न्यूज

- संगत के दर्शन के लिए होगी विशेष ट्रेन संचालित

झज्जर, 04 अप्रैल। हरियाणा सरकार की मुख्यमंत्री तीर्थ यात्रा योजना के तहत श्री हजूर साहिब नांदेड़, महाराष्ट्र के लिए 5 मई को कुरुक्षेत्र से विशेष ट्रेन रवाना होगी। मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी इस ट्रेन को झंडी दिखाकर प्रदेश के विभिन्न जिलों से जाने वाली संगत को रवाना करेंगे।

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने जानकारी देते हुए बताया कि वरिष्ठ नागरिक, जिनकी आयु 60 वर्ष से अधिक है और उनकी पारिवारिक आय एक लाख 80 हजार रुपए से कम है, वे इस योजना का लाभ उठा सकते हैं। योजना का लाभ उठाने के लिए सरल हरियाणा पोर्टल पर 15 अप्रैल तक पंजीकरण किया जा सकता है। पात्र व्यक्ति नजदीकी सीएससी सेंटर या अपने स्मार्ट फोन से सरल हरियाणा पोर्टल पर घर बैठे इस निःशुल्क यात्रा के लिए पंजीकरण कर सकते हैं।

योजना का लाभ उठाने के लिए यह होगी पात्रता

डीसी ने बताया कि मुख्यमंत्री तीर्थ यात्रा योजना के तहत आवेदन करने के लिए आवेदक हरियाणा का निवासी हो और परिवार पहचान पत्र होना अनिवार्य है। इसके साथ वैध फोटो पहचान पत्र (जैसे आधार कार्ड, पैन कार्ड या अन्य सरकारी आईडी), शारीरिक रूप से यात्रा के लिए फिट होने की स्वयं घोषणा आवश्यक है, इसके अलावा पिछले तीन वर्षों में योजना का लाभ न लिया हो। योजना के तहत यात्रियों के रहने, खाने और स्थानीय परिवहन की पूरी व्यवस्था सरकार द्वारा अपने स्तर पर की जाएगी।

उन्होंने बताया कि वरिष्ठ नागरिक को एक सहायक के रूप में पूर्ण भुगतान पर साथ ले जाने की अनुमति है। वहीं 18 से 60 वर्ष आयु वर्ग या 1.80 लाख से अधिक आय वाले लोग इस योजना का लाभ पूर्ण भुगतान पर उठा सकते हैं। योजना के नियमों के अनुसार, कोई भी व्यक्ति हर तीन वर्षों में केवल एक बार ही इस सुविधा का लाभ ले सकता है। पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर संचालित इस योजना में आवेदन के लिए परिवार पहचान पत्र अनिवार्य है।

पंजीकरण के उपरांत संगत को डीआईपीआरओ कार्यालय में देनी होगी सूचना

डीसी ने बताया कि आवेदन करने के उपरांत आवेदक को लघु सचिवालय, झज्जर स्थित जिला सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी कार्यालय में अवश्य देनी होगी ताकि पात्र व्यक्तियों की सूचना रेलवे को समय पर भेजी जा सके। पंजीकृत व्यक्ति 16 अप्रैल से पहले यह सूचना डीआईपीआरओ कार्यालय में अवश्य दें।

ग्राम स्तरीय मध्यस्थता को बढ़ावा देने के लिए चिन्हित गांवों में 6 अप्रैल से लगेंगे जागरूकता शिविर

सीजेएम एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव विशाल ने दी जानकारी

झज्जर, 04 अप्रैल। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, झज्जर द्वारा ग्राम स्तरीय सामुदायिक मध्यस्थता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मध्यस्थता अभियान 2.0 के अंतर्गत विशेष जागरूकता शिविरों का आयोजन किया जाएगा। यह अभियान एमडीडी ऑफ इंडिया एनजीओ, झज्जर के सहयोग से संचालित किया जाएगा।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी विशाल ने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य ग्रामीण स्तर पर आपसी विवादों का समाधान मध्यस्थता के माध्यम से कराना तथा आमजन को त्वरित, सुलभ एवं किफायती न्याय के प्रति जागरूक करना है।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव विशाल ने आमजन से अपील की है कि वे इन शिविरों में अधिक से अधिक भाग लें तथा मध्यस्थता के माध्यम से अपने विवादों का आपसी सहमति से समाधान कराएं।

उन्होंने बताया कि जागरूकता अभियान के तहत पैरा लीगल वालंटियर्स एवं सामुदायिक सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा शेड्यूल अनुरूप जागरूकता निम्नानुसार कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

यह रहेगा कार्यक्रमों का शेड्यूल

06 अप्रैल - झज्जर शहर- शिवधन एवं संदीप जांगड़ा (सीएसडब्ल्यू)
07 अप्रैल - जहाजगढ़ एवं दूबलधन - नवीन कुमारी एवं संदीप जांगड़ा (सीएसडब्ल्यू)
09 अप्रैल - गांव बाकरा एवं मांगावास - शिवधन एवं संदीप जांगड़ा (सीएसडब्ल्यू)
13 अप्रैल - गोरिया एवं बहु झोलरी - बबीता कुमारी एवं संदीप जांगड़ा (सीएसडब्ल्यू)
16 अप्रैल - सुबाना एवं हसनपुर - रोशनी एवं संदीप जांगड़ा (सीएसडब्ल्यू)
18 अप्रैल - बहादुरगढ़ शहर - नेहा रानी एवं संदीप जांगड़ा (सीएसडब्ल्यू)
20 अप्रैल - डीघल एवं शेरिया - शिवधन एवं संदीप जांगड़ा (सीएसडब्ल्यू)
21 अप्रैल - मलिकपुर एवं गोधडी - शिवधन एवं संदीप जांगड़ा (सीएसडब्ल्यू)
25 अप्रैल - बहादुरगढ़ शहर - नेहा रानी एवं संदीप जांगड़ा (सीएसडब्ल्यू)

गांवों में पहली बार जनता देख रही है अपना पैसा, अपना विकास

[ईग्रामस्वराज : गांवों को इंतजार नहीं, अधिकार देने वाली व्यवस्था]
[जब गांवों तक पहुंचा डिजिटल शासन, तब बदला विकास का अर्थ]

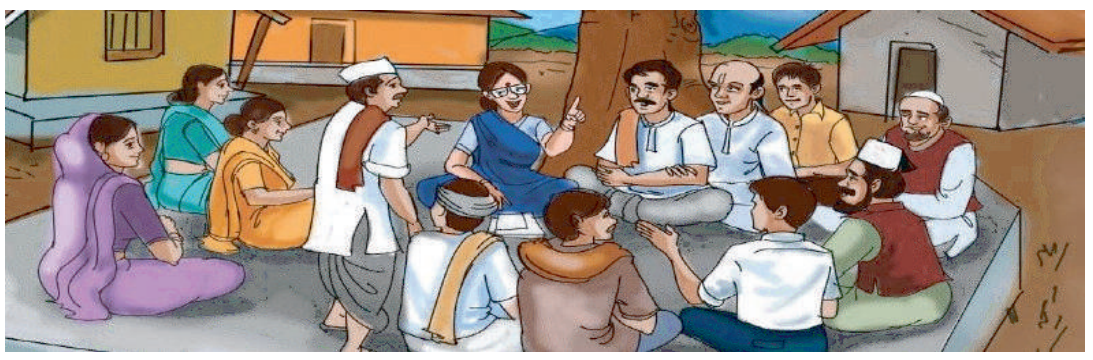

जब किसी देश के गांव बदलते हैं, तभी उसका भविष्य बदलता है। आज भारत के गांवों में ऐसा ही ऐतिहासिक परिवर्तन दिखाई दे रहा है। कभी पंचायत कार्यालयों में धूल खाती फाइलें, महीनों तक रुके भुगतान और विकास योजनाओं पर उठते सवाल आम थे। लेकिन अब वही ग्राम पंचायतें डिजिटल व्यवस्था के बल पर नई पहचान बना रही हैं। ईग्रामस्वराज पोर्टल के माध्यम से ₹3 लाख करोड़ से अधिक का भुगतान होना केवल सरकारी उपलब्धि नहीं, बल्कि गांवों में बदलती व्यवस्था का मजबूत प्रमाण है। यह सफलता बताती है कि अब विकास का धन कागजों में नहीं अटकता, बल्कि सीधे जरूरत और काम तक पहुंचता है। भारत के गांव अब केवल विकास की प्रतीक्षा नहीं कर रहे, बल्कि स्वयं विकास की दिशा तय कर रहे हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस बदलाव ने पंचायतों के कामकाज का पूरा स्वरूप बदल दिया है। पंचायती राज मंत्रालय द्वारा विकसित ईग्रामस्वराज पोर्टल, ई-पंचायत अभियान का एकीकृत मंच है, जहां योजना, बजट, लेखा, निगरानी और भुगतान की पूरी प्रक्रिया एक साथ पूरी होती है। पहले ग्राम पंचायतों को अलग-अलग रजिस्टर, विभागीय मंजूरी और कागजी कार्यवाही पर निर्भर रहना पड़ता था। इससे समय अधिक लगता था और गड़बड़ी की आशंका भी बनी रहती थी। अब पंचायतें गांव की जरूरत के अनुसार योजना बनाती हैं, उसे पोर्टल पर दर्ज करती हैं और काम पूरा होते ही भुगतान जारी कर देती हैं। सार्वजनिक वित्त प्रबंधन प्रणाली से जुड़ाव के कारण हर लेन-देन तुरंत दर्ज होता है और उसका पूरा विवरण सुरक्षित रहता है।

जहां कभी गांवों में विकास योजनाएं कागजों तक सीमित रहती थीं, वहीं आज वही गांव डिजिटल बदलाव की मिसाल बन रहे हैं। मार्च 2026 तक ईग्रामस्वराज पोर्टल से ₹3 लाख करोड़ से अधिक का भुगतान हो चुका है। केवल वित्तीय वर्ष 2025-26 में ही ₹53,342 करोड़ का हस्तांतरण हुआ। यह बताता है कि गांवों ने डिजिटल व्यवस्था को तेजी से अपनाया है। आज 2,59,798 पंचायती राज संस्थाएं और 1.60 करोड़ से अधिक विक्रेता इस मंच से जुड़े हैं। साथ ही 2,55,254 ग्राम पंचायतें अपनी विकास योजनाएं पोर्टल पर अपलोड कर चुकी हैं। इतनी बड़ी भागीदारी सिद्ध करती है कि ग्रामीण भारत अब तकनीक से दूर नहीं, बल्कि उसके साथ आगे बढ़ रहा है। गांवों की चौपाल से पंचायत भवन तक अब डिजिटल सोच पहुंच चुकी है।

जहां पहले पंचायतों के खर्च और योजनाएं लोगों से छिपी रहती थीं, वहीं अब हर जानकारी सबके सामने है। यही इस व्यवस्था की सबसे बड़ी ताकत है—पारदर्शिता और जवाबदेही। पहले गांवों में यह जानना कठिन था कि पंचायत को कितनी राशि मिली और वह कहां खर्च हुई। योजनाओं की जानकारी अक्सर कुछ लोगों तक सीमित रहती थी। अब ईग्रामस्वराज पोर्टल पर हर पंचायत का पूरा हिसाब उपलब्ध है। कोई भी नागरिक देख सकता है कि किस योजना के लिए कितनी राशि मिली, कितना खर्च हुआ और कौन-सा काम किस स्थिति में है। इससे ग्राम सभा केवल औपचारिक बैठक नहीं, बल्कि निगरानी और निर्णय का मजबूत मंच बन गई है। जनता को जानकारी मिलते ही पंचायतों की जवाबदेही बढ़ती है और लोकतंत्र की जड़ें गहरी होती हैं।

सबसे बड़ा बदलाव गांव की अर्थव्यवस्था में दिखाई दे रहा है। पहले छोटे दुकानदारों, स्थानीय ठेकेदारों और सेवा देने वालों को भुगतान के लिए लंबे समय तक इंतजार करना पड़ता था। कई बार उन्हें पंचायत कार्यालय के बार-बार चक्कर लगाने पड़ते थे। अब भुगतान सीधे उनके बैंक खाते में पहुंच रहा है। इससे बिचौलियों की भूमिका लगभग समाप्त हो गई है। समय पर धन मिलने से छोटे व्यवसायियों का भरोसा बढ़ा है और गांवों में आर्थिक गतिविधियां तेज हुई हैं। सड़क निर्माण, पेयजल व्यवस्था, स्वच्छता अभियान, विद्यालय मरम्मत और सामुदायिक भवन जैसे कार्य अब पहले से अधिक तेजी से पूरे हो रहे हैं। इससे स्थानीय रोजगार बढ़ा है और गांवों की अर्थव्यवस्था को नया सहारा मिला है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह बदलाव केवल दफ्तरों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि पूरे समाज को नई शक्ति दे रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित पंचायत सहायता प्रणाली अब 23 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। इससे गांव के लोग अपनी भाषा में पंचायत की कार्यवाही और योजनाओं को आसानी से समझ पा रहे हैं। पहले कठिन सरकारी भाषा और प्रक्रियाओं के कारण महिलाएं, किसान और युवा पंचायत से दूर रहते थे। अब वही लोग सक्रिय रूप से जुड़ रहे हैं। महिलाएं घर बैठे योजनाओं की जानकारी देख रही हैं, किसान विकास कार्यों की स्थिति समझ रहे हैं और युवा पंचायत के निर्णयों पर नजर रख रहे हैं। इस प्रकार ईग्रामस्वराज केवल डिजिटल मंच नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता और जनभागीदारी का नया आधार बन गया है।

यह सफलता जितनी बड़ी है, उसका सफर उतना ही कठिन रहा है। देश के अनेक दूरस्थ गांवों में इंटरनेट की कमी, अनियमित बिजली और डिजिटल जानकारी का अभाव बड़ी बाधाएं थे। शुरुआत में कई पंचायत प्रतिनिधि और कर्मचारी नई व्यवस्था को समझ नहीं पा रहे थे। लेकिन लगातार प्रशिक्षण और सरल प्रणाली ने यह मुश्किल दूर कर दी। पंचायत प्रतिनिधियों को तकनीकी प्रशिक्षण मिला, गांवों तक डिजिटल उपकरण पहुंचे और पोर्टल को इतना आसान बनाया गया कि कम पढ़े-लिखे लोग भी इसका उपयोग कर सकें। यही कारण है कि आज 2.5 लाख से अधिक पंचायतें इस मंच से जुड़ चुकी हैं। यह साबित करता है कि मजबूत संकल्प के सामने हर बाधा छोटी पड़ जाती है।

आज ईग्रामस्वराज पोर्टल गांवों में आए परिवर्तन का सबसे बड़ा प्रतीक बन चुका है। यह केवल एक वेबसाइट नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव है। आने वाले समय में सरकारी ई-बाजार से जुड़ाव, तात्कालिक विवरण पट और उन्नत निगरानी जैसी सुविधाएं इसे और प्रभावी बनाएंगी। इससे पंचायतों के कामकाज में अधिक तेजी, पारदर्शिता और विश्वसनीयता आएगी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि डिजिटल शासन अब केवल महानगरों तक सीमित नहीं, बल्कि गांव-गांव तक पहुंच चुका है। ग्राम पंचायतें सशक्त होंगी, तभी देश सशक्त होगा। और जब हर नागरिक अपनी पंचायत के कामकाज पर नजर रखेगा, तभी सच्चे अर्थों में स्वराज स्थापित होगा—ऐसा स्वराज जो पारदर्शी, जवाबदेह और जनता के हाथों में हो।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

रायसेन में 11 से 13 अप्रैल तक "उन्नत कृषि महोत्सव 2026", तीन दिवसीय मेला बनेगा खेती का गेम चेंजर

संगिनी घोष

रायसेन में 11 से 13 अप्रैल तक "उन्नत कृषि महोत्सव 2026: प्रदर्शनी एवं प्रशिक्षण" का आयोजन किया जाएगा, जिसे खेती-किसानी के क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव लाने वाला कार्यक्रम माना जा रहा है।

यह तीन दिवसीय राष्ट्रीय कृषि मेला, जिसे "कृषि महाकुंभ" भी कहा जा रहा है, हजारों किसानों को एक ही मंच पर सरकारी योजनाओं से लेकर बाजार तक की सुविधाएं उपलब्ध कराएगा।

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान की पहल पर इस आयोजन का उद्देश्य किसानों को बिचौलियों से मुक्त बाजार, बेहतर मूल्य और सुरक्षित उपज की व्यवस्था उपलब्ध कराना है।

किसानों के लिए बड़ा मंच

यह मेला किसानों के लिए एक ऐसा मंच बनेगा, जहां उन्हें योजनाओं, तकनीक और बाजार की पूरी जानकारी एक साथ मिलेगी, जिससे उनकी आय और उत्पादकता में वृद्धि होगी।

आधुनिक सुविधाएं और व्यवस्थाएं

आयोजन स्थल दशहरा मैदान, रायसेन में तीन बड़े हैंगर और तीन सेमिनार हॉल बनाए जा रहे हैं, जहां प्रदर्शनी, प्रशिक्षण और विशेषज्ञों के सत्र आयोजित होंगे।

बाजार से सीधा जुड़ाव

इस पहल का मुख्य उद्देश्य किसानों को सीधे बाजार से जोड़ना है, ताकि उन्हें उचित मूल्य मिले और बिचौलियों पर निर्भरता कम हो।

मंत्री ने किया स्थल निरीक्षण

कार्यक्रम से पहले शिवराज सिंह चौहान ने केंद्र और राज्य के अधिकारियों के साथ रायसेन में मेला स्थल का निरीक्षण कर तैयारियों की समीक्षा की।

ऐसे देखें तो यह कृषि महोत्सव किसानों को आधुनिक तकनीक, योजनाओं और बाजार से जोड़कर खेती को अधिक लाभकारी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

मुख्य बिंदु

* 11–13 अप्रैल तक रायसेन में उन्नत कृषि महोत्सव 2026
* तीन दिवसीय मेला बनेगा खेती का गेम चेंजर
* दशहरा मैदान में 3 हैंगर और 3 सेमिनार हॉल
* पहल शिवराज सिंह चौहान द्वारा
* किसानों को योजनाओं से बाजार तक एक ही मंच पर लाभ
* बिचौलियों से मुक्त बाजार और बेहतर मूल्य पर जोर
* मंत्री द्वारा मेला स्थल का निरीक्षण

SEO Meta

Description: रायसेन में 11-13 अप्रैल को उन्नत कृषि महोत्सव 2026 आयोजित होगा, जिसमें किसानों को तकनीक, प्रशिक्षण और बाजार से जुड़ने का अवसर मिलेगा।

निज़ी स्कूलों की मनमानी, महंगी किताबों और अभिभावकों के शोषण के खिलाफ़ उठी बुलंद आवाज़:

अभिभावकों के आर्थिक शोषण के खिलाफ उपेंद्र सिंह की सीएम योगी से बड़ी मांग

उपेंद्र सिंह ने चिंता जताई कि शिक्षा, जो समाज की सेवा का माध्यम होनी चाहिए, अब धीरे-धीरे व्यापार का रूप लेती जा रही है।

उन्होंने कहा कि हर वर्ष किताबों के नाम पर बढ़ता यह खर्च मध्यम और निम्न आय वर्ग के परिवारों के लिए बड़ी चुनौती बनता जा रहा है।

उन्होंने महाराज जी से निवेदन किया कि अभिभावकों को किसी एक दुकान से खरीद के लिए बाध्य करने वाले स्कूलों पर कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए – इसके साथ ही जिला स्तर पर निगरानी समितियों का गठन भी होना चाहिए ताकि अभिभावकों की शिकायतों का त्वरित और प्रभावी निस्तारण सुनिश्चित किया जा सके।

उत्तर प्रदेश, संजय साग़र सिंह। यूपी में निजी विद्यालयों द्वारा महंगी किताबों के नाम पर अभिभावकों के आर्थिक शोषण का मुद्दा एक बार फिर जोर पकड़ता दिख रहा है। इस गंभीर विषय पर चिंता व्यक्त करते हुए भारतीय जाटव समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं वरिष्ठ नेता उपेंद्र सिंह ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को एक विस्तृत पत्र भेजा हैं।

उपेंद्र सिंह ने अपने पत्र में स्पष्ट किया कि प्रदेश के अधिकांश निजी विद्यालय शिक्षा विभाग के निर्देशों की अनदेखी करते हुए अभिभावकों पर अनावश्यक आर्थिक बोझ डाल रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि एनसीईआरटी की सस्ती और गुणवत्तापूर्ण पुस्तकों के स्थान पर निजी प्रकाशकों की महंगी 'रिफरेंस' पुस्तकों को अनिवार्य किया जा रहा है, जिनकी कीमतें कई गुना अधिक होती हैं।

उन्होंने यह भी बताया कि कई विद्यालय प्रबंधन और चुनिंदा पुस्तक विक्रेताओं के बीच कथित सांठगांठ के चलते अभिभावकों को केवल निर्धारित दुकानों से ही पुस्तकें खरीदने के लिए मजबूर किया जाता है। इन दुकानों पर न तो कोई छूट मिलती है और न ही विकल्प, जिससे आम लोगों की जेब पर सीधा असर पड़ रहा है।

उपेंद्र सिंह ने कहा कि हर वर्ष किताबों के नाम पर बढ़ता यह खर्च मध्यम और निम्न आय वर्ग के परिवारों के लिए बड़ी चुनौती बनता जा रहा है। उन्होंने चिंता जताई कि शिक्षा, जो समाज की सेवा का माध्यम होनी चाहिए, अब धीरे-धीरे व्यापार का रूप लेती जा रही है।

इस समस्या के समाधान के लिए उन्होंने मुख्यमंत्री से कई महत्वपूर्ण मांगें रखीं

इनमें सभी निजी विद्यालयों को एनसीईआरटी पाठ्यक्रम और पुस्तकों को प्राथमिकता देने के सख्त निर्देश जारी करना, निजी प्रकाशकों की पुस्तकों के लिए मूल्य सीमा निर्धारित करना, और अभिभावकों को किसी एक दुकान से खरीद के लिए बाध्य करने वाले स्कूलों पर कड़ी कार्रवाई शामिल है। इसके साथ ही उन्होंने जिला स्तर पर निगरानी समितियों के गठन की भी मांग की, ताकि अभिभावकों की शिकायतों का त्वरित और प्रभावी निस्तारण सुनिश्चित किया जा सके।

भाकियू कार्यकर्ताओं ने अपनी प्रमुख माँगो को लेकर जिला अधिकारी के नाम थाना बिनावर प्रभारी निरीक्षक को सोपा ज्ञापन

संवाददाता: शिवेंद्र यादव

बिनावर: जनपद बदायूं के थाना बिनावर कस्बा में भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) की मासिक बैठक हुई। इस दौरान भारतीय किसान यूनियन के कार्यकर्ताओं ने बदायूं जिला अधिकारी के नाम थाना बिनावर प्रभारी निरीक्षक अरिहंत कुमार सिद्धार्थ को ज्ञापन दिया गया है। जिसमें बैंकों में हो रही किसानों से अवैध वसूली और बिनावर में बरेली बदायूं हाईवे मार्ग व बिलहैत रोड सब्जी मंडी के निकट लगे अतिक्रमण को हटाया जाए।

आवारा गौवंश से किसानों की खेती को बचाया जाए, बिजली विभाग द्वारा स्मार्ट मीटर से अवैध वसूली को लेकर ज्ञापन दिया गया है। इस दौरान तहसील अध्यक्ष सदर बदायूं अर्जुन सिंह, मंडल प्रवक्ता राजेश सक्सेना, पप्पू सैफी ब्लाक अध्यक्ष, जिला उपाध्यक्ष अजय पाल सिंह, सुरेश दीवान जी, कैसर अली पूर्व प्रधान सहित सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सात्विक प्रेम में दूरी का कोई महत्व नहीं होता है - पं. चन्द्रकांत मिश्र

गोरखपुर। प्रेम शाश्वत और अलौकिक होता है प्रेम का संचार दूर होने के बावजूद बना रहता है उक्त बाते पंडित चंद्रकांत मिश्र ने चौरीचौरा के गौनर गांव में यजमान विश्वनाथ उपाध्याय राम संवारी देवी द्वारा आयोजित श्रीमद्भागवत कथा में कहीं । उन्होंने श्रीकृष्ण रुक्मिणी के प्रेम का वर्णन करते हुए कहा कि जब भी नारद जी राजा भीष्मत के पास जाते थे भगवान कृष्ण के गुण और रूप का वर्णन करते थे जिसे रुक्मिणी सुनती थीं बार बार कृष्ण की चर्चा सुनकर उन्हें मन ही मन भगवान कृष्ण से प्रेम करने लगी ।इसी तरह नारद जी जब भी कृष्ण के पास जाते थे तो रुक्मिणी के गुण और रूप की चर्चा करते थे जिसे सुनकर भगवान कृष्ण भी रुक्मिणी से प्रेम करने लगे इस तरह कृष्ण और रुक्मिणी में प्रेम हो गया। सात्विक प्रेम में दूरी का कोई महत्व नहीं होता है प्रेम अलौकिक होता है। इस अवसर पर राकेश उपाध्याय चंद्रभूषण उपाध्याय शशांक , कुंज उपाध्याय जितेंद्र कसौधन चंद्रभूषण ओझा रामेश्वर कश्यप रुद्रप्रताप कसौधन सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

फ्रेशर्स और फेयरवेल जैसे आयोजन केवल औपचारिक कार्यक्रम नहीं होते - डॉ आशुतोष

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। गंगोत्री देवी महिला महाविद्यालय में शनिवार को नवप्रवेशी छात्राओं के स्वागत एवं वरिष्ठ छात्राओं को भावभीनी विदाई देने के उद्देश्य से फ्रेशर्स पार्टी एवं फेयरवेल समारोह का भव्य आयोजन किया गया। समारोह में उत्साह, आत्मीयता, भावुकता और सांस्कृतिक उल्लास का मनोहारी संगम देखने को मिला। आयोजन फ्रेशर्स और फेयरवेल दोनों स्वरूपों में आयोजित किया गया, जिसमें एक ओर नई छात्राओं के लिए स्वागत का आत्मीय भाव था, तो दूसरी ओर वरिष्ठ छात्राओं के लिए सम्मान, स्मृतियों और शुभकामनाओं से भरी विदाई का संदेश निहित था।

समारोह के मुख्य अतिथि महाविद्यालय के प्रबंध निदेशक आशुतोष मिश्र रहे, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्या डॉ. गौरी पांडेय ने की। अपने संबोधन में मुख्य अतिथि आशुतोष मिश्र ने कहा कि फ्रेशर्स और फेयरवेल जैसे आयोजन केवल औपचारिक कार्यक्रम नहीं होते, बल्कि ये विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, संवाद-कौशल, आत्मविश्वास और आपसी संबंधों को सुदृढ़ करने के सशक्त माध्यम बनते हैं। उन्होंने छात्राओं से कहा कि वे अपने जीवन में शिक्षा के साथ-साथ संस्कार, अनुशासन और आत्मनिर्भरता को भी समान महत्व दें, क्योंकि यही तत्व उन्हें भविष्य में विशिष्ट पहचान दिलाएंगे।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्राचार्या डॉ. गौरी पांडेय ने कहा कि महाविद्यालय परिवार के लिए यह अवसर अत्यंत विशेष होता है, जब एक ओर नई छात्राओं का स्वागत किया जाता है और दूसरी ओर वरिष्ठ छात्राओं को नई उड़ान के लिए शुभाशीष दिया जाता है।

उन्होंने कहा कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त करना नहीं, बल्कि संवेदनशील, सशक्त और मूल्यनिष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण करना है।कार्यक्रम में सांस्कृतिक परिषद की अध्यक्ष डॉ सीमा श्रीवास्तव, डॉ प्रियंका त्रिपाठी, डॉ. अर्पिता त्रिपाठी, डॉ. विकास गुप्ता, डॉ. आभा गुप्ता, डॉ. प्रत्या उपाध्याय, डॉ. रेनू गौर, डॉ. सुषमा मिश्रा, शिवांगी त्रिपाठी, डॉ. आमना खातून, डॉ. कुमुद त्रिपाठी, डॉ. शीला त्रिपाठी, डॉ. श्रुति त्रिपाठी, शालिनी त्रिपाठी, प्रिया श्रीवास्तव, तृप्ति सिंह तथा नर्सिंग विभाग के प्रधानाचार्य प्रकाश सिंह चौधरी, पूर्व प्रधानाचार्य लौरीटा याकूब सहित अनेक शिक्षिकाएँ एवं गणमान्यजन उपस्थित रहें।

प्रोफेसर केपी सिंह पुनः निर्विरोध चुने गए दिल्ली पुस्तकालय संघ के अध्यक्ष

वरिष्ठ प्रोफेसर आर के भट्ट भी रहे उपस्थित। परिवहन विशेष न्यूज

प्रतिष्ठित शिक्षाविद्, उत्कृष्ट अकादमिक प्रशासक, शिक्षक हितों के लिए संघर्ष करने वाले शिक्षक, कुशल संपादक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी प्रो. के.पी सिंह भारत के 88 साल पुराने दिल्ली पुस्तकालय संघ के निर्विरोध अध्यक्ष चुने गए।प्रो.सिंह वर्तमान में दिल्ली विश्वविद्यालय में पुस्तकालय और सूचना विज्ञान विभाग के प्रभारी;गांधी भवन के निदेशक और स्नातकोत्तर छात्रावास के प्रोवोस्ट के रूप में कार्यरत हैं।

एक प्रेस कांफ्रेंस में नई टीम की घोषणा करते हुए, डीएलए की नव-नियुक्त जन सूचना अधिकारी डॉ.रितु वर्मा ने बताया कि वर्ष 2026 से 2030 के लिए दिल्ली

पुस्तकालय संघ ने निम्नलिखित पदाधिकारी को चुना गया है:-प्रो.केपी सिंह को अध्यक्ष,प्रो.मीरा को वरिष्ठ उपाध्यक्ष,डॉ.कुमार संजय को उपाध्यक्ष,डॉ.ज्ञानेंद्र नारायण सिंह को महासचिव,डॉ.महेश चंद को कोषाध्यक्ष,तथा डॉ.तरुणा जोशी और राजकुमार पैटन को सचिव के रूप में चुना गया।

दिल्ली लाइब्रेरी एसोसिएशन, जिसे आमतौर पर डीएलए के नाम से जाना जाता है। भारत के सबसे पुराने पुस्तकालय संघों में से एक है ।इसकी स्थापना 1939 में सर जॉन फिलिप सार्जेंट ब्रिटिश भारत के प्रमुख शिक्षा सचिव ने अध्यक्ष और प्रो.राम किशोर दिल्ली विश्वविद्यालय के तत्कालीन माननीय कुलपति ने वरिष्ठ उपाध्यक्ष के रूप में की थी।भारत में पुस्तकालय शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा देने में डीएलए की भूमिका को देखते हुए 1953 में इस संघ को प्रमुख राजनीतिक हस्तियों द्वारा पुनर्जीवित किया गया।इनमें चौधरी ब्रह्म प्रकाश दिल्ली के पहले मुख्यमंत्री और सुश्री शांता वशिष्ठ राज्यसभा से दो बार सांसद और उस समय दिल्ली की शिक्षा मंत्री शामिल थे। डीएलए को प्रो.सीपी वशिष्ठ, प्रो.गिरजा कुमार, डॉ.रविंदर कुमार शर्मा और प्रो.के.पी. सिंह जैसे पूर्व अध्यक्षों की समृद्ध विरासत प्राप्त है।

डीएलए के महासचिव, डॉ.ज्ञानेंद्र नारायण सिंह ने बताया कि केपी सिंह का अध्यक्ष के तौर पर यह दूसरा कार्यकाल है ।यह दूसरा कार्यकाल उनके पहले कार्यकाल (2022-2026) के दौरान रखी गई मज़बूत नींव को और आगे बढ़ाने वाला साबित होगा ।प्रो.सिंह के नेतृत्व में डीएलए ने कई अहम उपलब्धियाँ हासिल की हैं,जिनमें वित्तीय स्थिरता का निवारण उनके करिश्माई नेतृत्व को दर्शाती है। केपी सिंह सतत विकास का पर्याय हैं।

इस अवसर पर वरिष्ठ प्रो आर के भट्ट,डॉ.पिंकी शर्मा, डॉ.निवेदिता शर्मा,डॉ.नरेंद्र कुमार,डॉ.प्रभात कुमार चौधरी,डॉ.अशोक कुमार-निदेशक इग्नू, डॉ. तरुणा जोशी,डॉ.राजेश कुमार,डॉ.हंसराज,सतवीर सिंह खासा,डॉ.विनय गुप्ता, उमेश गुप्ता,प्रतीक सिंह, सिद्धार्थ राय,परमीत सिंह, आशीष कुमार,पुनीत पाण्डेय, के सी मनोज,राहुल कुमार सिंह,राजेश तिवारी,उपासना आदि उपस्थित रहे।

अयोध्या में राम उत्सव पर्व एवं 25 वीं चित्रांजलि का भव्य शुभारंभ में छायाकारों को मिला सम्मान,

इन्दौर के फोटोजर्नलिस्ट सोनू यादव प्रथम रहें

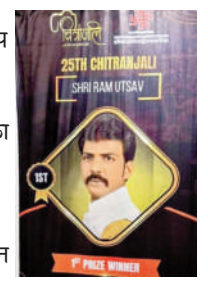

नई दिल्ली। अयोध्या न्यास, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र एवं चित्रांजलि समिति के संयुक्त तत्वावधान में 10 दिवसीय "चित्रांजलि" का भव्य शुभारंभ इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की कलाधिका में हुआ। स्व. महेंद्र चौधरी की स्मृति में आयोजित "राम उत्सव चित्रांजलि" प्रदर्शनी में देशभर से प्राप्त 3200 से अधिक छायाचित्रों में से चयनित तस्वीरें प्रदर्शित की गईं, जिनमें राम मंदिर उद्घाटन के दौरान देशभर में हुऐ उत्सवों की झलक देखने को मिली।

प्रदर्शनी का उद्घाटन महंत कमल नयन दास, सुरेश भैय्याजी जोशी, दिया कुमारी, मनोज सिन्हा, राम बहादुर राय एवं डॉ. सच्चिदानंद जोशी सहित अन्य अतिथियों ने किया। इस अवसर पर एक कॉफी टेबल बुक का विमोचन भी किया गया। चित्रांजलि के विजेताओं में सोमनाथ पॉल, धनराज काडला, गणेश नामदेव तथा राम उत्सव श्रेणी में इंदौर से प्रथम पुरस्कार सोनू यादव, द्वितीय पुरस्कार राजू पवार और तीसरा पुरस्कार सतीश लाल को सम्मानित किया गया। आयोजन में समिति सदस्यों ने अतिथियों का स्वागत किया। इन्दौर के फोटो जर्नलिस्टों को सम्मान मिलने प्रेस क्लब के पदाधिकारियों ने और शहर की पत्रकारिता से जुड़े सभी लोगों ने बधाई व शुभकामनाएं दी है।

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

ज्यूडिशियल काउंसिल ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से 'बहुत देर होने से पहले' कार्रवाई की मांग की

नई दिल्ली (न्यूज़ वार्ता): ज्यूडिशियल काउंसिल ने औपचारिक रूप से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के अध्यक्ष को एक अत्यंत महत्वपूर्ण और तात्कालिक संचार भेजते हुए इज़राइल–संयुक्त राज्य अमेरिका और ईरान के बीच चल रहे तथा तेजी से बढ़ते युद्ध को रोकने के लिए तुरंत और निर्णायक कार्रवाई की मांग की है।

अपने पत्र में ज्यूडिशियल काउंसिल ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से आग्रह किया है कि वह आपातकालीन बैठक बुलाए और तत्काल युद्धविराम के लिए एक बाध्यकारी प्रस्ताव पारित करे। ज्यूडिशियल काउंसिल ने चेतावनी दी है कि यदि अब भी निष्क्रियता बनी रही, तो इसके वैश्विक स्तर पर विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं। स्थिति के और अधिक बिगड़ने के मद्देनज़र ज्यूडिशियल काउंसिल ने अपनी गहरी चिंता दोहराते हुए स्पष्ट किया है कि अब विचार-विमर्श का समय समाप्त हो चुका है—अब तत्काल और प्रभावी कार्रवाई की आवश्यकता है।

पिछले कुछ सप्ताहों में यह संघर्ष अत्यंत तीव्र हो गया है, जिसमें बड़े पैमाने पर सैन्य अभियान, जवाबी मिसाइल हमले और विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक विनाश की खबरें सामने आई हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका और इज़राइल द्वारा ईरान पर किए गए समन्वित हमलों के बाद भारी जवाबी कार्रवाई हुई, जिससे बड़ी संख्या में लोगों की जान गई, बुनियादी ढांचे को गंभीर नुकसान पहुंचा और नागरिकों का बड़े पैमाने पर विस्थापन हुआ।

ज्यूडिशियल काउंसिल के चेयरमैन श्री राजीव अग्निहोत्री ने कहा, "हालिया घटनाक्रम एक खतरनाक बढ़ोतरी की ओर संकेत करते हैं, जिसमें सैन्य गतिविधियों का विस्तार, महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे पर खतरा और क्षेत्रीय अस्थिरता में वृद्धि शामिल है। व्यापक अंतरराष्ट्रीय संघर्ष का जोखिम अब केवल कल्पना नहीं, बल्कि आसन्न वास्तविकता बन चुका है, जिससे वैश्विक आर्थिक व्यवस्था, ऊर्जा बाजार और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा पर गंभीर दबाव पड़ रहा है।"

ज्यूडिशियल काउंसिल ने इस संघर्ष के कारण उत्पन्न हो रहे मानवीय संकट पर भी गहरी चिंता व्यक्त की है। नागरिक आबादी हिंसा का सबसे अधिक भार झेल रही है, जहां लगातार बढ़ती मौतों और बुनियादी ढांचे के विनाश ने अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून के तहत गंभीर प्रश्न खड़े कर दिए हैं।

अपने पत्र में ज्यूडिशियल काउंसिल ने स्पष्ट रूप से कहा है कि यदि तुरंत कार्रवाई नहीं की गई, तो इसके परिणाम केवल इस क्षेत्र तक सीमित नहीं रहेंगे। और चेतावनी दी है कि लंबा चलता संघर्ष वैश्विक शांति को अस्थिर कर सकता है, अंतरराष्ट्रीय व्यापार को बाधित कर सकता है और पहले से ही कमजोर अर्थव्यवस्थाओं को गंभीर संकट में धकेल सकता है।

श्री राजीव अग्निहोत्री ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से निम्नलिखित कदम उठाने का आह्वान किया है:

बिना किसी देरी के आपातकालीन बैठक बुलाना

एक बाध्यकारी और प्रभावी युद्धविराम प्रस्ताव पारित करना

संबंधित देशों के बीच प्रत्यक्ष कूटनीतिक वार्ता शुरू करना नागरिकों की सुरक्षा और मानवीय सहायता की पहुंच सुनिश्चित करना, ज्यूडिशियल काउंसिल ने यह भी रेखांकित किया कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद पर वैश्विक शांति और सुरक्षा को खतरे में डालने वाले संघर्षों को रोकने की ऐतिहासिक जिम्मेदारी है। इस महत्वपूर्ण समय पर चुप्पी या विलंबित कार्रवाई को अंतरराष्ट्रीय दायित्व की विफलता माना जाएगा।

ज्यूडिशियल काउंसिल के चेयरमैन श्री अग्निहोत्री ने कहा, "दुनिया एक खतरनाक मोड़ पर खड़ी है। यदि तुरंत और निर्णायक कदम नहीं उठाए गए, तो इसके परिणाम केवल एक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहेंगे पूरा विश्व प्रभावित होगा। दुनिया एक अत्यंत खतरनाक मोड़ पर खड़ी है। यह संघर्ष अब एक भू-राजनीतिक विवाद से बढ़कर वैश्विक संकट का रूप ले चुका है, जिसके दूरगामी परिणाम हो सकते हैं ।जिनमें तेल की बढ़ती कीमतें, आपूर्ति श्रृंखला में बाधा, बढ़ती महंगाई और वित्तीय अस्थिरता शामिल हैं। अग्निहोत्री ने चेतावनी दी कि यदि यह स्थिति जारी रही, तो दुनिया एक लंबे आर्थिक संकट और मानवीय कठिनाइयों के दौर में प्रवेश कर सकती है,जिसका सबसे अधिक असर विकासशील देशों और कमजोर वर्गों पर पड़ेगा"।

ज्यूडिशियल काउंसिल ने न्याय, शांति और विधि के शासन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए सभी वैश्विक संस्थाओं से राजनीतिक विचारों से ऊपर उठकर मानवता की रक्षा करने का आग्रह किया ।

नौकरीपेशा महिलाएं दोहरी जिम्मेदारियों के साथ जीवन की दौड़

● डॉ. विजय गर्ग

नौकरीपेशा महिला की सुबह ज्यादातर दूसरों से पहले शुरू होती है। घर के सभी काम, बच्चों की देखभाल, खाना बनाना और फिर समय पर कार्यालय पहुंचना यह सब एक दिनचर्या का हिस्सा बन जाता है। ऑफिस में भी उन्हें अपना काम पूरी जिम्मेदारी और ईमानदारी से करना पड़ता है। दिन भर की थकान के बाद भी वे घर आकर दोबारा घरेलू कार्यों में शामिल हो जाती हैं।

आज के आधुनिक समाज में नौकरीपेशा महिलाओं की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण हो गई है। वे न केवल घर का रखरखाव करती हैं, बल्कि आर्थिक रूप से मजबूत परिवार बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। लेकिन इस योगदान के साथ उन्हें दोहरी जिम्मेदारियों का बोझ भी उठाना पड़ता है। एक तरफ कार्यालय की ड्यूटी और दूसरी तरफ घर की देखभाल।

नौकरीपेशा महिला की सुबह ज्यादातर दूसरों से पहले शुरू होती है। घर के सभी काम, बच्चों की देखभाल, खाना बनाना और फिर समय पर कार्यालय पहुंचना यह सब एक दिनचर्या का हिस्सा बन जाता है। ऑफिस में भी उन्हें अपना काम पूरी जिम्मेदारी और ईमानदारी से करना पड़ता है। दिन भर की थकान के बाद भी वे घर आकर दोबारा घरेलू कार्यों में शामिल हो जाती हैं।

यह दोहरी जिम्मेदारी कभी-कभी महिलाओं के लिए मानसिक और शारीरिक दबाव का कारण बनती है। समय की कमी, अपने लिए समय न मिलना और सामाजिक अपेक्षाओं का बोझ उनके जीवन को चुनौतीपूर्ण बना देता है। फिर भी, वे हर कठिनाई का सामना अपनी हिम्मत और समर्पण से करते हैं।

समाज में अभी भी यह धारणा पूरी तरह से नहीं बदली है कि घरेलू काम केवल महिला की जिम्मेदारी है। यदि परिवार के अन्य सदस्य भी घरेलू कार्यों में भाग लेते हैं, तो नौकरीपेशा महिलाओं का जीवन काफी आसान हो सकता है। साथ ही, कार्यस्थल पर भी उनके लिए सुविधाएं और लचीले समय की व्यवस्था होनी चाहिए।

आज के समय में महिला सिर्फ घर की देखभाल तक ही सीमित नहीं रही। वह आसमान की ऊंचाइयों को छू रही है। चाहे वह विज्ञान, शिक्षा, बैंकिंग या राजनीति का क्षेत्र हो। लेकिन जब एक महिला घर से बाहर काम करने जाती है, तो उसकी जिम्मेदारियां कम होने के बजाय दोगुनी हो जाती हैं।

घर और कार्यालय के बीच संतुलनः एक नौकरीपेशा महिला के लिए दिन सूर्योदय से पहले शुरू होता है। रसोई का काम, बच्चों को तैयार करने और बुजुर्गों की देखभाल करने के बाद वह अपने कार्यालय के लिए रवाना होती है। कार्यालय में वह अपनी पूरी मेहनत और योग्यता के साथ काम करती है, लेकिन शाम को घर लौटने पर ही वह फिर से 'गृहिणी' की भूमिका में आ जाती है।

मानसिक और शारीरिक बोझ दोहरी भूमिका निभाते हुए महिलाएं अक्सर 'सुपरवुमन' बनने की कोशिश करती हैं। इस दौड़ में वे अपने स्वास्थ्य और आराम को पीछे छोड़ देती हैं। थकानः पूरे दिन काम करने के बाद भी रात में घर के कामों की चिंता करना मानसिक थकान का कारण बनता है। अपराध बोधः कभी-कभी काम की व्यस्तता के कारण वे बच्चों को पूरा समय नहीं दे पाते, जिससे उन्हें अंदर से दोषी महसूस होने लगता है।

सामाजिक चुनौतियां हमारा समाज अभी भी पूरी तरह से मानसिक रूप से विकसित नहीं हुआ है। आज भी यह अपेक्षा की जाती है कि चाहे महिला कितनी भी बड़ी अधिकारी क्यों न हो, घर का सारा काम उसकी जिम्मेदारी होती है। कार्यस्थल पर भी कभी-कभी महिलाओं को पूर्वाग्रह या कम समझा जाने की चुनौती का सामना करना पड़ता है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि नौकरीपेशा महिलाएं हमारे समाज की रीढ़ हैं। वे अपने घर और काम दोनों को अच्छी तरह से संभालती हैं। उनकी कुशलता, उत्साह और समर्पण हमें सिखाता है कि किसी भी कठिनाई को इरादे के बल से जीया जा सकता है। समाज का कर्तव्य है कि वह उनका सम्मान करे और उन्हें समान अधिकार और सुविधाएं प्रदान करे।

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

संपादकीय

चिंतन-मनन

चंद्रमा के गुप्त जलाशय अगली अंतरिक्ष यात्रा को शक्ति प्रदान करते हैं

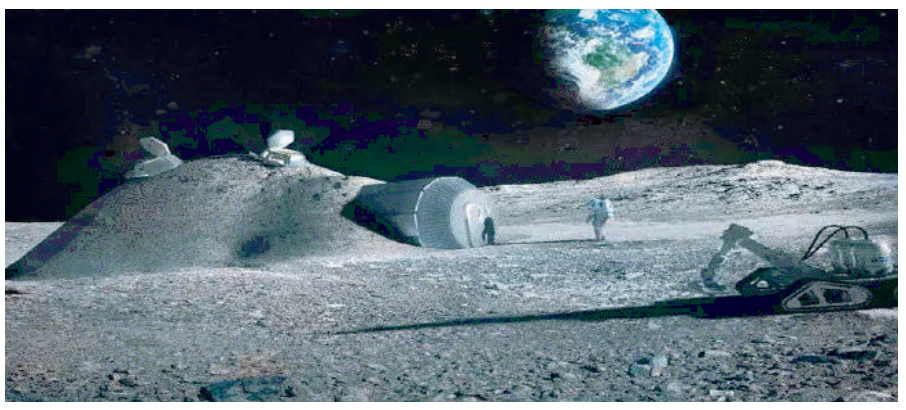

डॉ विजय गर्ग

दशकों से चंद्रमा को एक बंजर और शुष्क संसार माना जाता था।

लेकिन हाल की वैज्ञानिक खोजों ने इस धारणा को नाटकीय रूप से बदल दिया है। चंद्रमा की सतह पर पानी का पता चलने से न केवल पृथ्वी के निकटतम पड़ोसी के बारे में हमारी समझ बदल गई है, बल्कि मनुष्यों को चंद्रमा पर वापस लाने में वैश्विक रुचि भी जागृत हुई है।

चंद्रमा पर जल की उपस्थिति की पुष्टि सबसे पहले चांद्रयान-1 जैसे मिशनों और बाद में नासा द्वारा किए गए अवलोकनों के माध्यम से हुई। वैज्ञानिकों ने पाया कि पानी कई रूपों में मौजूद है, जैसे ध्रुवों के निकट स्थायी रूप से छायांकित गड्ढों में बर्फ के रूप में जमी हुई है और यहां तक कि सूर्य की रोशनी वाली मिट्टी में फंसे अणुओं के रूप में भी। इस खोज ने उस लंबे समय से चली आ रही धारणा को चुनौती दी कि चंद्रमा पूरी तरह सूखा था।

हाल ही में, अंतरिक्ष एजेंसियों ने इन जल भंडारों का पता लगाने और मानचित्रण करने के प्रयास बढ़ाए हैं। नासा के लुनार ट्रेलब्लेजर और आगामी रोवर-आधारित अन्वेषण जैसे मिशनों का उद्देश्य यह पहचानना है कि पानी कहां केंद्रित है और चंद्र सतह पर वह कैसे व्यवहार करता है। ये प्रयास सिर्फ वैज्ञानिक नहीं हैं। वे रणनीतिक हैं।

जल टिकाऊ अंतरिक्ष अन्वेषण की कुंजी है। इसका उपयोग पीने, सांस लेने योग्य ऑक्सीजन उत्पादन और यहां तक कि हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित करके रॉकेट ईंधन बनाने के लिए भी किया जा सकता है। इसका मतलब यह है कि भविष्य के अंतरिक्ष यात्रियों को पृथ्वी से सभी आवश्यक संसाधनों को ले जाने की आवश्यकता नहीं होगी, जिससे मिशन की लागत और जटिलता में काफी कमी आएगी।

चंद्रमा का दक्षिण ध्रुव विशेष रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरा है। वहां गहरे गड्ढे स्थायी छाया में रहते हैं, जो बर्फ के भंडार को संरक्षित करते हैं, जो संभवतः अरबों वर्षों से मौजूद थे। ये जमे हुए भंडार दीर्घकालिक मानवीय उपस्थिति का समर्थन कर सकते हैं तथा मंगल ग्रह और उससे आगे के मिशनों के लिए ईंधन भरने वाले स्टेशन के रूप में काम कर सकते हैं।

व्यावहारिक उपयोगों के अलावा, चंद्र जल की खोज का भी वैज्ञानिक महत्व है। इसका अध्ययन करने से पृथ्वी पर जल की उत्पत्ति और सौरमंडल के इतिहास के बारे में सुराग मिल सकते हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि चंद्रमा का पानी धूमकेतु के प्रभाव या सौर वायु कणों से उत्पन्न रासायनिक प्रतिक्रियाओं से आया हो सकता है।

परिणामस्वरूप, चंद्रमा अब केवल अतीत की महिमा का गंतव्य नहीं रह गया है। यह भविष्य के लिए एक द्वार बन रहा है। नासा, इस्रो और जैक्सए के प्रयासों सहित अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, चंद्रमा पर निरंतर मानवीय उपस्थिति बनाने की साझा दृष्टि को उजागर करता है।

निष्कर्षतः, जल की खोज ने चंद्रमा को एक निर्जीव उपग्रह से बदलकर अन्वेषण और नवाचार के लिए एक आशाजनक केंद्र बना दिया है। यह महत्वपूर्ण संसाधन है जो मानवता को इस बार चंद्र सतह पर लौटने के लिए प्रेरित कर रहा है, न केवल आने के लिए, बल्कि रहने के लिए भी।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाशास्त्री स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

चुनाव आयोग बनाम डिजिटल प्रचार : क्या नियम अप्रासंगिक हो चुके हैं?

डॉ. शैलेश शुक्ला

भारतीय चुनाव आयोग की स्थापना 1950 में हुई थी — उस समय जब चुनाव प्रचार का अर्थ था दीवारों पर पोस्टर, नुक्कड़ सभाएँ और अखबारों में विज्ञापन। उस युग के लिए जो नियम बनाए गए थे, वे अपने समय की दृष्टि से अत्यंत उचित और प्रभावी थे लेकिन आज, जब चुनाव प्रचार का केंद्र फेसबुक की वॉल, व्हाट्सएप के समूह, यूट्यूब के चैनल और इंस्टाग्राम की रील्स बन चुकी हैं तो यह प्रश्न बिल्कुल उचित और अत्यावश्यक है कि क्या चुनाव आयोग के पास इस नई डिजिटल वास्तविकता से निपटने के लिए पर्याप्त अधिकार, संसाधन और नियम हैं? उत्तर, दुर्भाग्य से, काफी हद तक नकारात्मक है।

जन प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 और आदर्श आचार संहिता (एमसीसी) भारत में चुनाव प्रचार के मुख्य नियामक उपकरण हैं। आदर्श आचार संहिता में चुनाव प्रचार सामग्री के संबंध में कई प्रावधान हैं — जैसे कि धर्म, जाति या भाषा के आधार पर मतों की अपील न करना, मतदाताओं को रिश्वत न देना, और चुनाव खर्च की सीमा का पालन करना लेकिन ये प्रावधान मुख्यतः भौतिक दुनिया — रैलियों, पोस्टरों, होर्डिंगों, और प्रसारण मीडिया — को ध्यान में रखकर बनाए गए थे। डिजिटल प्रचार के कई रूप इन नियमों के स्पष्ट दायरे से बाहर हैं।

चुनाव खर्च की सीमा का उदाहरण लें। 2024 के लोकसभा चुनाव में लोकसभा उम्मीदवारों के लिए खर्च की अधिकतम सीमा 95 लाख रुपये (बड़े राज्यों में) और 75 लाख रुपये (छोटे राज्यों में) निर्धारित थी लेकिन डिजिटल विज्ञापनों का एक बड़ा हिस्सा उम्मीदवारों के नाम पर नहीं बल्कि पार्टी के नाम पर, तीसरे पक्ष के संगठनों के नाम पर, या बिल्कुल अनाम रूप से चलाया जाता है। व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से किए जाने वाले प्रचार का कोई मौद्रिक मूल्यांकन संभव नहीं है और इसे खर्च की सीमा में शामिल नहीं किया जाता। इस प्रकार, डिजिटल माध्यम चुनाव खर्च की सीमा को अप्रासंगिक बना देता है।

2019 के आम चुनाव में एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) की एक रिपोर्ट के अनुसार, राजनीतिक दलों द्वारा फेसबुक और गूगल पर घोषित डिजिटल विज्ञापन खर्च का जो आँकड़ा चुनाव आयोग को दिया गया, वह वास्तविक खर्च से काफी कम था। फेसबुक की स्वयं की 'एड लाइब्रेरी' रिपोर्ट से पता चला कि केवल भाजपा और कांग्रेस ने उस चुनाव के दौरान फेसबुक पर करोड़ों रुपये के विज्ञापन दिए थे लेकिन इसका एक बड़ा हिस्सा चुनाव आयोग को दी गई खर्च विवरणी में शामिल नहीं था। यह नियामक प्रणाली की एक मौलिक खामी को उजागर करता है।

पेड न्यूज़ की समस्या, जो पहले मुख्यतः प्रिंट और टेलीविज़न मीडिया में थी, अब डिजिटल माध्यमों में और भी विकराल रूप ले चुकी है। डिजिटल न्यूज़ पोर्टलों, यूट्यूब चैनलों और सोशल मीडिया 'इन्फ्लुएंसरों' को राजनीतिक प्रचार के लिए पैसे देना और उसे 'समाचार' या 'विचार' के रूप में प्रस्तुत करना बेहद आसान हो गया है। चुनाव आयोग के पेड न्यूज़ से संबंधित प्रावधान मुख्यतः पंजीकृत प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर लागू होते हैं। हज़ारों अनाम या कम-ज्ञात डिजिटल प्रकाशनों और सोशल मीडिया खातों पर इन्हें प्रभावी ढंग से लागू करना लगभग असंभव है।

साइलेंस पीरियड — यानी मतदान से 48 घंटे पहले का वह समय जब राजनीतिक प्रचार बंद होना चाहिए — डिजिटल युग में भी एक बड़ी चुनौती है। टेलीविज़न और रेडियो पर इसे लागू करना अपेक्षाकृत सरल है लेकिन सोशल मीडिया पर यह नियम व्यावहारिक रूप से कागज़ी बन जाता है। पुराने पोस्ट और वीडियो सर्कुलेट होते रहते हैं, नए 'स्पॉन्सर्ड' कंटेंट अप्रत्यक्ष रूप से जारी रहते हैं और व्हाट्सएप समूहों में तो किसी प्रकार की कोई रोक संभव ही नहीं है। 2019 और 2024 दोनों चुनावों में इस नियम के उल्लंघन की अनेक शिकायतें आईं लेकिन कार्रवाई नगण्य रही।

चुनाव आयोग ने इस बदलती परिस्थिति के प्रति पूरी तरह आँखें नहीं मूँदी हैं। 2019 के चुनाव के पहले आयोग ने सोशल मीडिया कंपनियों के साथ एक 'स्वैच्छिक आचार संहिता' पर हस्ताक्षर किए और एक 'सोशल मीडिया कमेटी' का गठन किया। 2024 के चुनाव के लिए मेटा, गूगल, और अन्य कंपनियों के साथ समझौते किए गए लेकिन ये समझौते मुख्यतः स्वैच्छिक हैं, इनमें कानूनी बाध्यता नहीं है, और इनका क्रियान्वयन असंगत रहा है। जब कोई कंपनी चुनाव आयोग के अनुरोध पर कोई सामग्री हटाने से इनकार करती है तो आयोग के पास सीमित विकल्प होते हैं।

तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो कई लोकतांत्रिक देशों में डिजिटल प्रचार के नियमन के लिए अधिक व्यापक प्रयास हुए हैं। यूरोपीय संघ ने 'पॉलिटिकल एडवर्टाइज़िंग ट्रांसपेरेंसी रेगुलेशन' पारित किया है जो राजनीतिक विज्ञापनों में अनिवार्य प्रकटीकरण (डिसक्लोज़र) की माँग करता है। कनाडा ने 'इलेक्शन्स मॉडर्नाइज़ेशन एक्ट' में ऑनलाइन राजनीतिक विज्ञापनों के लिए पंजीकरण और पारदर्शिता की अनिवार्य आवश्यकताएँ जोड़ी हैं। ऑस्ट्रेलिया में डिजिटल प्रचार सामग्री पर भी 'प्रायोजित' लेबल अनिवार्य है। भारत में ऐसे व्यापक और बाध्यकारी कानूनी प्रावधान अभी भी नहीं हैं।

डिजिटल राजनीतिक विज्ञापनों की पारदर्शिता का मामला अत्यंत महत्वपूर्ण है। फेसबुक की 'एड लाइब्रेरी' और गूगल की 'ट्रांसपेरेंसी रिपोर्ट' कुछ जानकारी देती हैं, लेकिन यह पूरी तस्वीर नहीं है। व्हाट्सएप, टेलीग्राम और अन्य एनक्रिप्टेड मैसेजिंग सेवाओं पर होने वाला राजनीतिक प्रचार बिल्कुल अपारदर्शी है। एक अनुमान के अनुसार, भारत में 2024 के चुनाव के दौरान व्हाट्सएप पर प्रतिदिन करोड़ों राजनीतिक संदेश प्रसारित होते थे लेकिन उनमें से कितने भुगतान किए गए थे और किसने भुगतान किया था — यह जानने का कोई तरीका नहीं था।

माइक्रोटार्गेटेड राजनीतिक विज्ञापन चुनाव आयोग के लिए एक और अनसुलझी चुनौती है। जब कोई राजनीतिक दल फेसबुक पर एक विशेष जाति या धार्मिक समूह को लक्षित करके ऐसे विज्ञापन दिखाता है जो सार्वजनिक नहीं हैं तो चुनाव आयोग इसकी जाँच कैसे करे? आदर्श आचार संहिता का वह प्रावधान जो जातीय या धार्मिक आधार पर वोट माँगने को मना करता है, उन विज्ञापनों पर कैसे लागू हो जो केवल एक विशेष समुदाय तक पहुँचते हैं और जिनका कोई सार्वजनिक रिकॉर्ड नहीं है? यह एक ऐसी विधिक और तकनीकी पहेली है जिसका समाधान भारत के पास अभी नहीं है।

कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि चुनाव आयोग को अधिक तकनीकी क्षमता और मानव संसाधन की आवश्यकता है। एक विशेष 'डिजिटल मॉनिटरिंग सेल' जिसमें डेटा वैज्ञानिक, सोशल मीडिया विशेषज्ञ और साइबर सुरक्षा पेशेवर हों — यह आज की ज़रूरत है। साथ ही, प्रत्येक राज्य और ज़िला स्तर पर डिजिटल प्रचार की निगरानी की क्षमता विकसित करनी होगी लेकिन यह भी स्वीकार करना होगा कि तकनीकी निगरानी की अपनी सीमाएँ हैं — जब प्रचार का पैमाना अरबों संदेशों और करोड़ों उपयोगकर्ताओं तक फैला हो, तो किसी भी नियामक संस्था के लिए पूर्ण नियंत्रण असंभव है।

जलवायु परिवर्तनः पान की पारंपरिक खेती खतरे में

राजस्थान में पान की खेती जलवायु परिवर्तन की मार से सिमट रही है लेकिन नीतिगत अनदेखी ने संकट को और गहरा दिया है। गांवों में यह खेती छूट रही है, गांव खाली हो रहे हैं। सवाल यह है कि क्या किसानों को अकेला छोड़ दिया गया है?

अमरपाल सिंह वर्मा

वरिष्ठ पत्रकार

राजस्थान के भरतपुर जिले की बयाना तहसील के कुछ गांव आजकल किसी रिपोर्ट के आंकड़े नहीं बल्कि एक धीमी त्रासदी की तरह सामने आते हैं। कभी यहां पान की बेलें सिर्फ खेतों में नहीं, लोगों की जिंदगी में भी लहलहाती थीं। आज वही बेलें सिकुड़ गई हैं और उनके साथ सिकुड़ गई है एक पूरे समुदाय की आर्थिक और सामाजिक दुनिया। एक आज ये गांव खाली हो रहे हैं। वहां के ग्रामीण कामकाज के लिए बड़े शहरों में पलायन कर गए हैं। खाली पड़े मकान गांवों को भुतहा सा दर्शाते हैं।

पिछले दिनों मैंने जब इस इलाके के बारे में सुना था तो एक बात बार-बार मन में आ रही थी कि क्या सचमुच यह सिर्फ मौसम की मार है? या फिर हम अपनी जिम्मेदारियों को 'जलवायु परिवर्तन' जैसे बड़े शब्दों के पीछे छिपा रहे हैं? यह सच है कि मौसम बदल गया है। सर्दियां पहले जैसी नहीं रही हैं, गर्मियां झुलसा देती हैं और बारिश अपने समय पर नहीं आती। पान जैसी नाजुक फसल के लिए यह बदलाव जानलेवा साबित हुआ है। मैं जब इस इलाके में गया तो गांवों की समृद्ध अर्थ व्यवस्था को उजड़े हुए पाया। खरैरी, बागरैन और खानखेड़ा गांवों के किसान बताते हैं कि पहले पान की एक बेल पंद्रह फीट तक जाती थी, अब सात-आठ फीट पर ही दम तोड़ देती है। पत्ते कम हो गए हैं, और जो हैं, वे भी अक्सर दागदार या जले हुए मिलते हैं।

लेकिन यहां कहानी यहीं खत्म नहीं होती है। असल कहानी वहां से शुरू होती है, जहां किसान मौसम से लड़ते-लड़ते थक जाता है और फिर उसे अहसास होता है कि इस लड़ाई में वह अकेला है। कोई उसके साथ नहीं है। पान की खेती आज भी फसल बीमा के दायरे से बाहर है। यह एक ऐसी हकीकत है जिसे सुनकर हैरानी नहीं बल्कि चिंता होनी चाहिए। बड़ा सवाल यह है कि जब जोखिम बढ़ रहा है, तब सुरक्षा का दायरा क्यों नहीं बढ़ता? क्या हमारी नीतियां केवल गेहूं-चावल जैसी मुख्यधारा की फसलों तक सीमित रह गई हैं? या फिर हम उन फसलों को नजरअंदाज कर रहे हैं, जो भले ही राष्ट्रीय आंकड़ों में बड़ी न दिखें लेकिन स्थानीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं?

बयाना का खरैरी गांव इसका जीता-जागता उदाहरण है। कभी यहां पान की वजह से इतनी रौनक थी कि बैंक की मुख्य शाखा तक खुल गई थी। आज हालात ऐसे हैं कि यह बैंक भी अपना बोरिया-बिस्तर समेट चुका है। यह सिर्फ एक आर्थिक गिरावट नहीं, बल्कि एक पूरे दौर के खत्म होने की निशानी है।

इसके बाद आता है पलायन। गांव के युवा अब खेतों में नहीं, शहरों की भीड़ में मिलते हैं। बड़े शहरों में कोई सिक्योरिटी गार्ड है, कोई हलवाई के यहां काम कर रहा है, कोई ऑटो चला रहा है। यह बदलाव सिर्फ पेशे का नहीं है बल्कि पहचान का भी है। जो लोग कभी अपने खेतों के दम पर समृद्ध थे, वे अब शहरों में मजदूरों की कतार का हिस्सा बन गए हैं।

सवाल यह भी है कि क्या हम गांवों को धीरे-धीरे खाली होते देखने के आदी हो चुके हैं? सरकार की भूमिका पर बात करना यहां जरूरी है लेकिन इसे केवल आलोचना के रूप में नहीं बल्कि जिम्मेदारी के रूप में देखना चाहिए। अगर किसी क्षेत्र में सदियों पुरानी खेती खत्म होने के कगार पर है तो क्या यह सिर्फ किसानों की समस्या है? या यह नीति-निर्माताओं के लिए भी एक चेतावनी है? पान की खेती को अगर बीमा, अनुदान, प्रशिक्षण और बाजार से जोड़ा जाता तो शायद हालात यह न होते। आसपास मंडी नहीं है, परिवहन की सुविधा कमजोर है—ऐसे में किसान अपनी उपज बेचने के लिए दूर-दराज के शहरों पर निर्भर है। इससे लागत बढ़ती जाती है, मुनाफा घटता जाता है और अंततः किसान खेती छोड़ देता है। हमें कई सवालों पर विचार करने की जरूरत है। क्या हम केवल संकट के बाद राहत देने वाली व्यवस्था बनकर रह जाएंगे? क्या हमारी कृषि नीति में विविधता के लिए जगह है?

और क्या हम परंपरागत खेती को बचाने के प्रति सचमुच गंभीर हैं? अगर सोचें तो इन सवालों के जवाब और समस्या का समाधान बहुत जटिल नहीं हैं लेकिन इरादा तो होना चाहिए।

पान जैसी खेती को विलुप्त होने से बचाने के लिए प्रयास करने की जरूरत है। इसके लिए सरकार और नीति नियंताओं को मिल कर प्रयास करने होंगे। सबसे पहले जरूरी है कि पान जैसी फसलों को फसल बीमा के दायरे में लाना जाए। ऐसा करके हम किसानों को कोई अहसान नहीं करेंगे बल्कि यह तो न्यूनतम सुरक्षा है, जो उन्हें मिलनी ही चाहिए। इसके साथ-साथ जलवायु के अनुरूप खेती के तरीकों पर स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षण और शोध की जरूरत है। इसके अलावा, छोटे-छोटे कृषि केंद्र और मंडियां विकसित करनी होंगी जिससे किसानों को बाजार से जोड़ा जा सके। बयाना के गांवों का अनुभव कड़वा है। जब खेतों में पान के पत्ते जलते है तो वहां सिर्फ फसल नहीं जलती, उसके साथ कई उम्मीदें, परंपराएं और भविष्य भी झुलस जाता है। ऐसा न हो, इसके लिए जरूरी कदम उठाने ही होंगे।

अमरपाल सिंह वर्मा (लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

तेल के खेल में सत्ता का नया केंद्र बनेगा भारत ?

सौरभ वार्ष्णेय

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दिए एक बयान से तेल के खेल में भारत सत्ता का नया केंद्र बन सकता है? राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने वेनेजुएला को लेकर एक बयान दिया है जिसमें साफ-साफ कहा है कि अब अमेरिका वेनेजुएला के साथ मिलकर काम कर रहा है। हम भारी मात्रा में तेल और गैस के उत्पादन और बिक्री में बहुत अच्छा तालमेल बिठा रहे हैं, जो संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद पृथ्वी पर दूसरा सबसे बड़ा भंडार अब हम कच्चे तेल के लिए मध्य पूर्व पर पूरी तरह से निर्भर नहीं हैं और फिर भी हम वहां सहायता के लिए मौजूद हैं। हालांकि, ट्रंप ने भले ही वेनेजुएला के तेल भंडार पर कब्जा कर लिया हो लेकिन इसमें सबसे अधिक फायदा भारत को हो सकता है। भारत इसमें सत्ता का केंद्र बन सकता है ? यानी भारत तेल के खेल में विश्व उर्जा का केंद्र बन सकता है क्योंकि भारत भले ही दूसरे देशों से कच्चे तेलों का निर्यात करता हो लेकिन कच्चे तेल की रिफाइनिंग के लिए अन्य देशों को हम भारत पर ही निर्भर रहना पड़ता है, क्योंकि रिफाइनरी के मामले में भारत दुनिया के सभी देशों से आगे हैं। अगर अमेरिका वेनेजुएला के कच्चे तेल को यूरोपियन देश को बेचता है तो इसमें भी भारत का ही सबसे अधिक फायदा है। क्योंकि, यूरोपियन देश भारत से सबसे अधिक रिफाइंड तेल खरीदते हैं। अमेरिका खुद भारत से सबसे अधिक रिफाइंड तेल का निर्यात करता है। ऐसे में आने वाला भविष्य भारत के लिए अच्छा संकेत दे रहा है।

वैश्विक राजनीति में तेल (ऊर्जा) हमेशा से शक्ति का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत रहा है। 20वीं सदी में (ऑर्गनाइजेशन ऑफ दॅ प्रेट्रोलियम इ एंड पोर्टिंग कंट्रीज) देशों और पश्चिमी शक्तियों के बीच तेल की राजनीति ने विश्व व्यवस्था को आकार दिया। आज 21वीं सदी के तीसरे दशक में, बदलते ऊर्जा समीकरणों के बीच यह सवाल फिर उठ रहा है—क्या भारत इस तेल के खेल में सत्ता का नया केंद्र बन सकता है?

इस बदलते वैश्विक ऊर्जा परिदृश्य में रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद वैश्विक तेल आपूर्ति श्रृंखलाओं में बड़ा बदलाव आया। यूरोप ने रूसी तेल पर निर्भरता घटाई, वहीं भारत ने सस्ते रूसी कच्चे तेल का आयात बढ़ाकर अपनी ऊर्जा रणनीति को मजबूत किया। इससे भारत न केवल लागत में बचत कर सका, बल्कि वैश्विक ऊर्जा बाजार में अपनी वॉर्गनिंग पॉवर भी बढ़ाई।

ऐसे में समय में भारत की रणनीतिक स्थिति की बात करे तो भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा तेल उपभोक्ता है। इसकी भौगोलिक स्थिति—मध्य पूर्व, रूस और एशिया के बीच—इसे एक प्राकृतिक ऊर्जा हब बनने का अवसर देती है। भारत ने एक ओर रूस से तेल आयात बढ़ाया, तो दूसरी ओर संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब के साथ संबंधों को भी संतुलित रखा।

भारत रिफाइनिंग और निर्यात की ताकत रखता है। भारत केवल तेल आयातक ही नहीं, बल्कि एक प्रमुख रिफाइनिंग हब भी बन चुका है। भारतीय रिफाइनरियां कच्चे तेल को प्रोसेस करके यूरोप और अन्य देशों को पेट्रोलियम उत्पाद निर्यात कर रही हैं। इस प्रक्रिया में भारत एक ₹मध्यस्थ शक्ति₹ के रूप में उभर रहा है—जहां कच्चा तेल कहीं से आता है और तैयार उत्पाद कहीं और जाता है।

अब सवाल उठता है क्या भारत बनेगा नया शक्ति केंद्र?

भारत के पास अवसर जरूर है, लेकिन यह पूर्ण सत्ता केंद्र बनने से ज्यादा संतुलनकारी शक्ति बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। भारत की असली ताकत उसकी कूटनीति, बाजार आकार और ऊर्जा विविधीकरण में है, न कि केवल तेल में। तेल का खेल अभी खत्म नहीं हुआ है, लेकिन इसके नियम बदल रहे हैं। भारत इस बदलते खेल का एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बन चुका है। यदि वह अपनी ऊर्जा नीति में संतुलन, आत्मनिर्भरता और हरित विकल्पों को साथ लेकर चलता है, तो भविष्य में वह केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि वैश्विक ऊर्जा राजनीति का निर्णायक केंद्र भी बन सकता है। ओपेक

ओपेक दुनिया के प्रमुख तेल उत्पादक देशों का एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है (ऑर्गनाइजेशन ऑफ दॅ प्रेट्रोलियम इ एंड पोर्टिंग कंट्रीज), जिसका मुख्य उद्देश्य सदस्य देशों की तेल नीतियों का समन्वय करना और वैश्विक तेल बाजार को प्रभावित करना है। इसके संस्थापक १९६० में और इसमें ईरान, इराक, कुवैत, सऊदी अरब और वेनेजुएला देश शामिल हैं। इसका मुख्यालय वियना (ऑस्ट्रिया) में हैं। इसके मुख्य कार्य तेल उत्पादन को नियंत्रित करना, सदस्य देशों के हितों की रक्षा करना, वैश्विक बाजार में तेल की कीमतों को स्थिर रखना, उपभोक्ता देशों को नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करना आदि है। समय-समय पर बैठकों में यह तय करता है कि सदस्य देश कितना तेल उत्पादन करेंगे। अगर कीमतें गिरती हैं ? उत्पादन घटाया जाता है। अगर कीमतें बढ़ती हैं ? उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। इस तरह वैश्विक तेल कीमतों पर सीधा प्रभाव डालता है। यह गठबंधन वैश्विक तेल बाजार पर और भी ज्यादा प्रभावशाली बन गया है। केवल एक संगठन नहीं, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था और राजनीति को प्रभावित करने वाली एक शक्तिशाली ताकत है। इसके निर्णय से पेट्रोल-डीजल की कीमतों से लेकर देशों की अर्थव्यवस्था तक प्रभावित होती है।

अगर हम भारत से रिफाइंड तेल खरीदने वाले प्रमुख देशों की बात करें तो इसमें अमेरिका भी भारत से तेल आयात करता है।नीदरलैंड साल 2024 में रिफाइंड पेट्रोलियम का सबसे बड़ा आयातक है। संयुक्त अरब अमीरात भी भारत से रिफाइंड तेल का प्रमुख आयातक है। रिफाइंड तेल खरीदार के रूप में सिंगापुर भी टॉप लिस्ट में शामिल है। ऑस्ट्रेलिया सहित अन्य देश भी रिफाइंड के मामले में भारत पर निर्भर है।

लेखक जाने माने पत्रकार हैं।

मानस चंचरीक आचार्य कुशदेव चतुर्वेदी बने संकट मोचन हनुमान मन्दिर के महंत

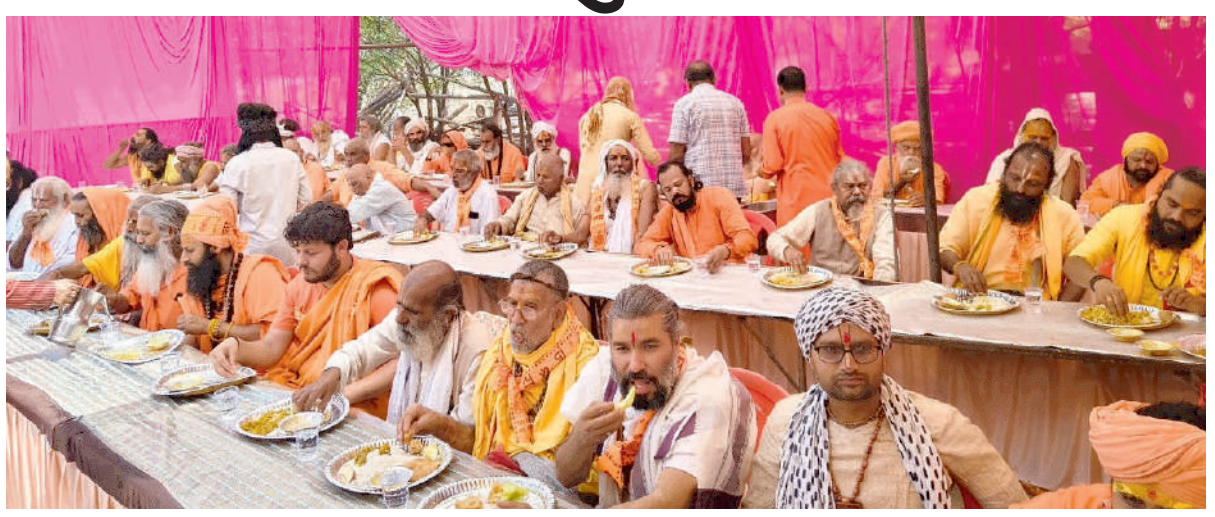

खट दर्शन महंत सेवा समिति ने विधि-विधान से ओढ़ाई महंताई की चादर

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

बाटी(मथुरा)। बहुलावन (बाटी) स्थित श्रीव्यास तपोवन (श्रीराम गौ सेवा कुंज) में श्रीराम मित्र मंडल (रजि.) के द्वारा नवनिर्मित संकट मोचन हनुमान मन्दिर में चल रहे चतुर्दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के चौथे दिन प्रातःकाल आचार्य कुंजकिशोर चतुर्वेदी (श्री गोपाल मंदिर, मथुरा) के आचार्यत्व में वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य न्यास प्राण प्रतिष्ठा की गई।साथ ही श्रीहनुमानजी महाराज की प्रथम आरती सम्पन्न हुई।तत्पश्चात खट दर्शन महंत सेवा समिति के द्वारा मानस चंचरीक आचार्य कुशदेव चतुर्वेदी को विधि-विधान से महंताई की चादर ओढ़ाई गई।

श्रीमज्जगद्गुरु विष्णुस्वामी विजयराम देवाचार्य भैयाजी महाराज (वल्लभगढ़ वाले), महामंडलेश्वर भास्करानंद महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी डॉ. आदित्यानंद गिरि महाराज, प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, महामंडलेश्वर स्वामी सच्चिदानंद शास्त्री महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी सुरेशानंद परमहंस महाराज, स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य महाराज (चित्रकूट), महंत रमणरेती दास महाराज, महंत संतदास महाराज, महंत श्याम सुन्दर दास महाराज, महंत संतोष पुजारी, महंत प्रिया शरण महाराज, डॉ. रमेश चंद्राचार्य विधिशास्त्री महाराज, डॉ. राधाकांत शर्मा, आचार्य भूति कृष्ण महाराज, महोत्सव की संयोजक श्रीमती कुंजलता चतुर्वेदी एवं आचार्य लवदेव चतुर्वेदी, संगीताचार्य शंभूशरण महाराज, महंत जगन्नाथ दास शास्त्री, प्रमुख समाजसेवी तुलसी स्वामी, वीरेन्द्र कुमार विश्नोई, महेन्द्र सिंह गर्ग, श्रीमती राज जिन्दल, सन्तोष वैष्णव, दिनेश त्रिपाठी, दिनेश वैष्णव, विनोद जिन्दल, गौरव, मधुर जिन्दल, बिक्की अवस्थी, कृष्ण केशर बानी, नन्द किशोर वैष्णव, राहुल सोनी, श्रीमती सुधा मूंदड़ा, अमित बंसल राहुल सोनी, अरविन्द चतुर्वेदी आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

ठाकुर श्री कौशल किशोर राम मंदिर के महंत आचार्य रामदेव चतुर्वेदी महाराज ने महोत्सव में पधारे समस्त महामण्डलेश्वरों, महंतों, विद्वानों व धर्माचार्यों का स्वागत शॉल ओढ़ाकर एवं प्रसाद भेंट करके किया।

कार्यक्रम का समापन सन्त, ब्रजवासी वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।जिसमें सैकड़ों व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

बल-विद्या, बुद्धि-विवेक और भक्ति-ज्ञान के प्रदाता हैं श्रीहनुमानजी महाराज : डॉ. अनुराग कृष्ण पाठक

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। अटल्ला चुंगी क्षेत्र स्थित वृन्दावन बालाजी देवस्थान में देवस्थान का चतुर्थ पाटोत्सव अत्यंत श्रद्धा व धूमधाम के साथ प्रख्यात आध्यात्मिक गुरु डॉ. अनुराग कृष्ण पाठक के पावन सानिध्य में सम्पन्न हुआ। जिसके अंतर्गत प्रातः काल श्रीहनुमानजी महाराज के श्रीविग्रह का पंचामृत से अभिषेक किया गया।साथ ही उनका विशेष श्रृंगार व पूजन करके नवीन पोशाक धारण करायी गईं।इसके अलावा उन्हें सवामनी लड्डुओं का भोग लगाया गया।सायं काल हनुमान चालीसा व सुंदरकाण्ड का संगीतमय सामूहिक गायन हुआ।तत्पश्चात सरस भजन संध्या संपन्न हुई।जिसमें कई प्रख्यात भजन गायकों द्वारा श्रीहनुमानजी महाराज की महिमा से ओत-प्रोत भजनों का संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य गायन किया गया।

बालाजी देवस्थान के संस्थापक अध्यक्ष व आध्यात्मिक गुरु डॉ. अनुराग कृष्ण पाठक ने कहा कि श्रीहनुमानजी महाराज बल-विद्या, बुद्धि-विवेक और भक्ति-ज्ञान के प्रदाता हैं।वे सप्त चिरंजीवियों में से एक हैं। श्रीहनुमानजी महाराज की आराधना करने से भगवान श्रीराम भी सहज में ही प्रसन्न हो जाते हैं और उनकी कृपा की दृष्टि सदा हमारे ऊपर बनी रहती है।

प्रमुख समाजसेवी व मथुरा-वृन्दावन नगर निगम के वरिष्ठ पार्षद पंडित राधाकृष्ण पाठक ने कहा कि वृन्दावन बालाजी देवस्थान की स्थापना हमारे सदगुरुदेव बाबा नीम करौरी महाराज की सद्प्रेरणा से हुई है।यहां प्रतिष्ठित हनुमानजी महाराज की प्रतिमा अत्यंत सिद्ध व चमत्कारिक है।

प्रख्यात साहित्यकार "यूपी रत्न" डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि वृन्दावन बालाजी देवस्थान श्रीधाम वृन्दावन का गौरव है।यहां पर हनुमानजी महाराज के साथ उनके पांच भाइयों की प्रतिमाएं भी विराजित हैं।जो कि विश्व में यहां के अलावा कहीं पर भी नहीं हैं।

श्रीकृष्ण काली पीठाधीश्वर डॉ. केशवाचार्य महाराज ने कहा कि वृन्दावन बालाजी देवस्थान में स्थित हनुमान स्तम्भ पर समूचा हनुमान चालीसा लिपिबद्ध है।जिसकी परिक्रमा करने से मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

महोत्सव का समापन महाआरती व सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।जिसमें सैकड़ों व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

इस अवसर पर भाजपा नेता पदम सिंह शर्मा, ठाकुर बांके बिहारी मंदिर की हाई पॉवर कमेटी के सदस्य दिनेश गोस्वामी, मथुरा-वृंदावन नगर निगम की मनोनीत भाजपा पार्षद श्रीमती शशि शुक्ला, एडवोकेट, भाजपा नेत्री श्रीमती मुदित्ता शर्मा, पार्षद सुमित गौतम, श्रीगोपाल वसिष्ठ, धर्मेंद्र गौतम (लीला भैया), प्रमुख समाज सेवी गोविंद कृष्ण पाठक, महंत हेमकांत शरण महाराज, डॉ. राधाकांत शर्मा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

डिजिटल क्रांति की नई टकसाल: क्रिप्टो माइनिंग के बढ़ते कदम और भविष्य की चुनौतियां

आर के सारस्वत

आज के आधुनिक युग में वित्तीय लेन-देन के तरीके तेजी से बदल रहे हैं। जहाँ कभी सिक्कों और नोटों का बोलबाला था, वहीं अब 'क्रिप्टोकरेंसी' जैसी डिजिटल मुद्राओं ने वैश्विक बाजार में अपनी एक अलग पहचान बना ली है। इस पूरी डिजिटल अर्थव्यवस्था के पीछे एक बहुत बड़ी और जटिल प्रक्रिया काम करती है जिसे हम 'क्रिप्टो माइनिंग' के नाम से जानते हैं। आम आदमी के लिए यह शब्द किसी रहस्य से कम नहीं है लेकिन अगर इसे गहराई से समझा जाए तो यह डिजिटल दुनिया की वह आधुनिक टकसाल है जहाँ बिना किसी सरकारी मशीनरी के नई मुद्रा का सृजन होता है और हर एक लेन-देन को सुरक्षित किया जाता है।

क्रिप्टो माइनिंग को समझने के लिए हमें इसे पारंपरिक बैंकिंग व्यवस्था से अलग हटकर देखना होगा। जहाँ बैंकों में हिसाब-किताब रखने के लिए एक केंद्रीय सिस्टम होता है, वहीं क्रिप्टोकरेंसी के नेटवर्क में यह जिम्मेदारी दुनिया भर में फैले लाखों माइनर्स की होती है। ये माइनर्स असल में शक्तिशाली कंप्यूटरों का एक जाल हैं जो हर समय जटिल गणितीय पहेलियों को हल करने में जुटे रहते हैं। जब भी कोई व्यक्ति डिजिटल मुद्रा का लेन-देन करता है तो ये कंप्यूटर उस डेटा की सत्यता की जांच करते हैं और उसे एक सुरक्षित डिजिटल डायरी में दर्ज कर देते हैं जिसे ब्लॉकचेन कहा जाता है। इस कठिन और खर्चीली प्रक्रिया के बदले में नेटवर्क इन माइनर्स को पुरस्कार के रूप में नई डिजिटल मुद्रा प्रदान करता है जिसे उनकी कमाई माना जाता है।

सुनने में यह प्रक्रिया जितनी सरल लगती है, धरातल पर यह उतनी ही चुनौतीपूर्ण है। शुरुआत में माइनिंग को सामान्य कंप्यूटरों के जरिए भी किया जा सकता था लेकिन जैसे-जैसे समय बदला और प्रतियोगिता बढ़ी, इसके लिए विशेष प्रकार के उच्च क्षमता वाले उपकरणों की आवश्यकता होने लगी। आज के दौर में 'एसिक माइनर्स' जैसी मशीनें और भारी-भरकम ग्राफिक्स काड्र्स के बिना माइनिंग की कल्पना करना भी मुश्किल है। इसके साथ ही, ये मशीनें चौबीसों घंटे काम करती हैं जिससे अत्यधिक गर्मी पैदा होती है और बिजली की खपत भी बहुत ज्यादा होती है। यही कारण है कि दुनिया भर में क्रिप्टो माइनिंग को लेकर पर्यावरण और ऊर्जा संसाधनों पर पड़ने वाले प्रभाव को लेकर भी बहस छिड़ी रहती है।

भारत जैसे देश में क्रिप्टो माइनिंग की स्थिति पर नजर डालें तो यहाँ की परिस्थितियां मिली-जुली हैं। एक तरफ जहाँ हमारी युवा पीढ़ी इस तकनीक को लेकर बहुत उत्साहित है, वहीं दूसरी ओर बुनियादी ढाँचे की चुनौतियां और सरकारी कर नीतियां इसकी राह में बड़ी बाधा बनकर उभरी हैं। भारत में क्रिप्टो से होने वाली आय पर लगने वाला भारी टैक्स और बिजली की बढ़ती कीमतें एक व्यक्तिगत माइनर के लिए मुनाफे को कम कर देती हैं। फिर भी, तकनीक के जानकार इसे केवल पैसा कमाने का जरिया नहीं बल्कि आने वाले समय की सबसे सुरक्षित तकनीक 'ब्लॉकचेन' का आधार मानते हैं।

क्रिप्टो माइनिंग केवल एक तकनीकी प्रक्रिया मात्र नहीं है बल्कि यह भविष्य की उस विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था का प्रतीक है जहाँ शक्ति किसी एक हाथ में न होकर पूरे समुदाय के पास होती है। जैसे-जैसे तकनीक और अधिक उन्नत होगी, संभावना है कि माइनिंग के तरीके भी बदलेंगे और यह अधिक पर्यावरण अनुकूल और सुलभ हो जाएगी। लेकिन फिलहाल, यह उन लोगों के लिए एक साहसिक क्षेत्र है जो तकनीक और जोखिम के बीच संतुलन बनाकर डिजिटल युग के इस नए 'सोने' की खोज में जुटे हैं।(अदिति फीचर्स)

आर के सारस्वत

अमीर अधिकारियों वाला गरीब राज्य - बिहार

अंबुज कुमार

बिहार, जो मध्यवर्ती मैदान का मुख्य भाग है, यह विश्व में सभ्यताओं का पालना कहा जाता है। हजारों वर्ष पूर्व पूरा पाषाण काल में छपरा, चंपारण, गया, सासाराम, मुंगेर क्षेत्र में मानव जीवन के प्रमाण मिले हैं। उस समय के औजार, बर्तनों का अवशेष मिला है। नवपाषण काल में कृषि के भी प्रमाण मिले हैं। नदियों की बहुलता ने इस क्षेत्र में मानव विकास को सुलभ बनाया है।।

सिंधु घाटी सभ्यता के दौर में भी यहां सभ्यता विकसित हुई थी। सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के बाद लोगों का प्रवजन के प्रमाण गंगा के उत्तर और दक्षिणी मैदानों में पाए जाते हैं। यहां के मूल निवासियों से संघर्ष और समन्वय भी संभवतः हुआ। मूल निवासी उत्तर के पर्वतीय क्षेत्र में और दक्षिण के पठारी भागों में स्थानांतरित हो गए।।

वैदिक काल में मगध का क्षेत्र क़कित प्रदेश के रूप में वर्णित है। ऋषि मुनियों के प्रवास की जानकारी मिलती है। गया में गयासुर के शक्तिशाली साम्राज्य का वर्णन हुआ है।

छठी सदी पूर्व मगध महाजनपद के रूप में ख्यात हो गया था। उस समय सोलह महाजनपद का प्रमाण पुराणों और जैन साहित्य से भी मिलता है। अंग, वैशाली अन्य महाजनपद बिहार में थे।।कालांतर में मगध सबसे शक्तिशाली साम्राज्य हो गया था। वैवाहिक संबंध एवं युद्ध से इसका विस्तार पश्चिम उत्तर तक हो गया था।

जैन और बौद्ध काल बिहार का स्वर्णिम काल काल माना जा सकता है। इस समय मगध साम्राज्य ही असली भारत का साम्राज्य बन चुका था। हरियक वंश, नंद वंश, मौर्य वंश का विशेष महत्व रहा है।। इस समय पटना का सुंदर अस्तित्व हो गया था। मेगास्थनीज ने अपने यात्रा विवरण में पटना को नौ मिल लंबा और डेढ़ मिल में आयताकार सुंदर बसावट की जानकारी दी है। उसने मथुरा क्षेत्र में यदुवंशी कृष्ण की पूजा होने की जानकारी दी है। उस समय के अठारह जातियों के अस्तित्व को स्वीकार किया है। साथ ही वर्ण व्यवस्था का भी अस्तित्व स्वीकार किया है।

कुषाण काल और गुप्त काल में बिहार प्रदेश की स्थिति अच्छी रही है। हूणों का आक्रमण गुप्त काल में ही हुआ था। स्कंदगुप्त ने उन्हें परास्त किया था। इसी समय मूर्ति कला, स्थापत्य कला, संगीत, साहित्य, गणित, विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई थी।। पांचवीं सदी में नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई, जो बिहार का आज भी पहचान बना हुआ है। पाल काल में विक्रमशिला विश्वविद्यालय भी बिहार की उन्नति में योगदान दिया।

इस समय चैत्य, बौद्ध विहारों की संख्या बहुत हो गई थी। उनके विहार या तीर्थ यात्रा की परंपरा स्थापित हो गई थी। बिहार क्षेत्र में इनकी संख्या ज्यादा थी। बाद में हिंदू धर्म में शंकराचार्य की ताकत बढ़ने से बौद्ध धर्म सिमटने लगा। कहा जाता है कि बौद्ध मठों पर हमले बढ़ गए थे। हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद बौद्ध धर्म को राज्याश्रय नहीं मिल सका।

इसके बाद भारत में इस्लाम का आक्रमण शुरू हुआ। वे मूर्तिपूजा के विरोधी थे। अरब से मूर्तिभंजन और अपना साम्राज्य स्थापित करते हुए ईरान, तुर्की से होते भारत में भी आए। लंबे संघर्ष के बाद तेरहवीं सदी में दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई। उस समय भी बिहार सल्तनत का एक सूबा बना रहा। बौद्ध विहारों को सर्जे बिहार कहा गया। इसी के पास प्रशासनिक इकाई का गठन हुआ। कहा जाता है कि बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय को नष्ट किया था। इतिहासकार प्रो डीएन झा का कहना है कि ब्राह्मणों ने बौद्ध शिक्षा दर्शन को नष्ट करने के लिए जला दिया था। तिब्बती गुरु तारानाथ का भी यही मानना था।

मुगल काल में भी बिहार सूबा बना रहा। इसके प्रधान को सूबेदार कहा जाता था। शेरशाह सूरी ने पटना का नव निर्माण कर प्रशासनिक केंद्र बनाया। ऐसा प्रतीत होता है कि पटना शहर मध्यकालीन दौर में बाढ़ से भी ग्रसित रहा होगा।

औरंगज़ेब के समय के चित्रकार भाग कर पटना आ गए थे जिससे पटना कलम चित्रकला का उद्भव हुआ।

पलासी की लड़ाई में अंग्रेजों को जीतने के बाद गद्दार मीरजाफर को हटाकर मीर कासिम को नवाब बनाया गया था। मीर कासिम को भी गद्दारी के लिए पद मिला था। उसका बेटा भी गद्दारी के लिए पद मांगने लगा। तब अंग्रेजों ने उसके गद्दार बेटा को पहली बार बिहार का उप नवाब बना दिया।।समाज और देश के गद्दारों को कुर्सी मिलने की परंपरा इस देश में रही है। एक को कुर्सी देकर पूरे समाज को गुलाम बना दिया जाता था।

अंग्रेजी शासन में बिहार सूबा की जगह प्रांत बन गया। फिर बंगाल, बिहार, उड़ीसा को मिलाकर संयुक्त प्रांत अंग्रेजों ने बनाया। बिहार के लोग अलग राज्य की मांग को लेकर आंदोलन भी कर रहे थे। 1905 में बंग भंग हुआ।12 दिसंबर 1911 को दिल्ली दरबार में जॉर्ज पंचम ने बिहार को अलग राज्य बनाने की घोषणा की। उसके बाद 22 मार्च 1912 को बिहार राज्य गठन की अधिसूचना जारी हो गई। 01 अप्रैल से विधिवत बिहार राज्य क्रियाशील हो गया।

अठारह सौ सत्तावन से लेकर 1905,1917,1922,1930,1942 के हर आंदोलनों में बिहार की बड़ी भूमिका रही है। महात्मा गांधी को पहली सत्याग्रह बिहार में ही करने का मौका मिला। भगत सिंह को भी बिहार आने का मौका मिला।

आजादी के बाद बिहार हर क्षेत्र में पिछड़ता रहा। सामंतवाद की गहरी पैठ ने इस राज्य के विकास में बाधाएं डाली। नक्सलवाद, जातीय सेनाएं, हिंसा, भेदभाव ने इस राज्य को सबसे अधिक गरीब, अविकसित, शिक्षा में फिसड्डी राज्य बना दिया है। आज भी औद्योगिक संकटों को झेलता यह राज्य पलायन की पीड़ा से ग्रसित है। अन्य राज्यों में निर्माण या औद्योगिक दुर्घटनाओं में मरने वाले सभी बिहारी होते हैं।

भ्रष्टाचार यहां की बड़ी समस्या है। छापे पड़ने वाले अधिकारियों के पास दर्जनों फ्लैट, बंगला, करोड़ों नगदी, सोने चांदी के भंडार इस गरीब राज्य को गहरा जख्म देता है। इसके बावजूद बिहार अपने स्वाभिमान के बल पर खड़ा है। (अदिति फीचर्स)

राजा सरायकेला का भैरव समक्ष ऐतिहासिक पूजा के साथ विश्व प्रसिद्ध सरायकेला छऊ का शुभारंभ

राजा तो इतिहास को जीवनदान कर गये पर उन परिवारों , संरक्षकों, जानकारों को सरकारी आयोजन से दुर क्यों ?

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला, सरायकेला राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव ने अपनी राजकीय परंपरा अनुसार सरायकेला के पुर्व दिशा में स्थित श्मशान भूमि समीप अखाड़ा साल में भैरव देव संग ढाल खंडा (एक तरह का उत्कलीय तलवारों की) की विधिवत पूजा अर्चना की । उत्कलीय संस्कृति व शदियों पुरानी कलिंग सभ्यता अनुरुप जगन्नाथ जी के उत्कलीय नववर्ष आगमन (महा विषुव पणा संक्रांति) पूर्व सरायकेला राजकीय घट पाट आयोजन के साथ विश्व प्रसिद्ध छऊ का मूल एक अखाड़ा अष्ट भैरव समक्ष यजमान के रूप में उन्होंने अपना माथा टेका । उत्कलीय खंड़ायत ,पाइक सैन्य परंपरा का यह बेजोड़ नमूना रहा है । जिसे देखने विदेशी जहां लालयित थे वहीं देश के प्रख्यात पत्रकार , लेखक ने देश विदेश से यहां आकर अपनी अनमोल छाप छोड़ी है । आज जब राजा धर में उपजा छावनी का छऊ सरकार आयोजन में षड्यंत्र पूर्वक मिट रहा है ऐसे में यहां उसके समर पिपासु खंडाययतों के फरिखंडा से जन्मा छऊ फिर नर्तक व उपासक दोनों यहां तलवार उठाकर नाचते हैं । जहां पाईक अखाड़े जीवन्त हो उठते हैं ।

डेढ़ सप्ताह तक चलने वाली विश्वप्रसिद्ध सरायकेला छऊ उत्सव का शुभारंभ हो गया । राजा सरायकेला प्रताप आदित्य सिंह देव उनके अनुयाई वर्ग । इतिहास धारक परिवारों बेजोड़ समावेश यहां देखने को मिला । यह वही सांकेतिक पूजा रही है जब उड़ीसा के रणबांकुरे युद्ध जाने के पहले ढाल तलवार की पूजा कर । उसमे भैरव भैरवियों को स्थान देते थे । उन्हें शत्रुओं के रक्त पिलाने हेतु सीधे श्मशान पूजारी के रूप में इतिहास में गिने जाते रहे ।यह किसी रियासत की राजकीय पूजा एवं उसका सामरिक उत्सव होता था जिसे बखूबी राजा सरायकेला के जरिए सरायकेला की पब्लिक दिल से आयोजन करती है।

आज सरायकेला राजमहल के राजागण और जगन्नाथ के सीमा सुरक्षा प्रहरी खंड़ायत गण रहे जिनका इतिहास को आजाद मुल्क में बिहार के बाद झारखंड सरकार समाप्त करने में तुली हुई है ,नतीजतन आज एक भी विदेशी पर्यटक अब यहां नहीं आते ।कभी इसी पूजा में उन लोगों की भीड़ व उत्सुकता परिलक्षित होती थी । यह भले ही सांकेतिक पूजा होता है भैरव भैरवियों एवं श्मशान गणों का पर इसका वास्तविक इतिहास उस कलिंग ,उत्कल के वीरो के साथ जूड़ा हुआ है जिनका साम्राज्य कभी गंगा से गोदावरी तक जीत के बाद फैला हुआ था । नाम था कलिंग । यह ढाल तलवार उत्तर कलिंग का हिस्सा रहा जो ओडिशा के पाईक वीरों का था । सरायकेला राजा स्वयं यजमान के तौर पर अखाड़ा साल में पूजा आरंभ की और रणवंकुर खड़ायतों वीरों की सामरिक इतिहास धारक तथा मार्शल आर्ट के नर्तक भी ढाल तलवार पकड़ कर सामरिक मुद्रा प्रदर्शन करते रहे जिसे फरिखंडा कहा जाता है ।फिर सबने साथ में भैरव अखाड़े में अन्न प्रसाद ग्रहण किया ।

सरायकेला स्टेट विलय 15 दिसंबर 1947 के बाद यह ओडिशा का एक जिला रहा । जहां ओड़िया संस्कृति को ओडिशा के तर्ज पर ध्यान रखने का विलय दस्तावेज में वर्णन है । प्रथम उपायुक्त ओडिशा कैडर के तेजतर्रार अधिकारी दुर्गा दास रहे । फिर इसे एक षड्यंत्र रच कर बिहार लाया जाता है एक वर्ष के लिए पर आजतक नहीं लौटाया गया ।इसी बीच अन्तिम शासक राजा आदित्य प्रताप सिंहदेव, फिर साथ में उनके पुत्र टिकायत नृपेंद्र नारायण सिंहदेव, उनके पुत्र राजा शतभानु सिंहदेव के बाद उनके पुत्र मौजूदा राजा साहब प्रताप आदित्य सिंहदेव आज भी संस्कृति को यथावत बनाए हुए हैं । जहां सरायकेला ही नहीं भारत वर्ष ही नहीं बल्कि विश्व के कला संस्कृति के पूजरियों का लगाव व ध्यान रहते देखा जा सकता है । इसी पूजा को आज राजा सरायकेला ने परंपरा अनुसार निर्वाह किया ।

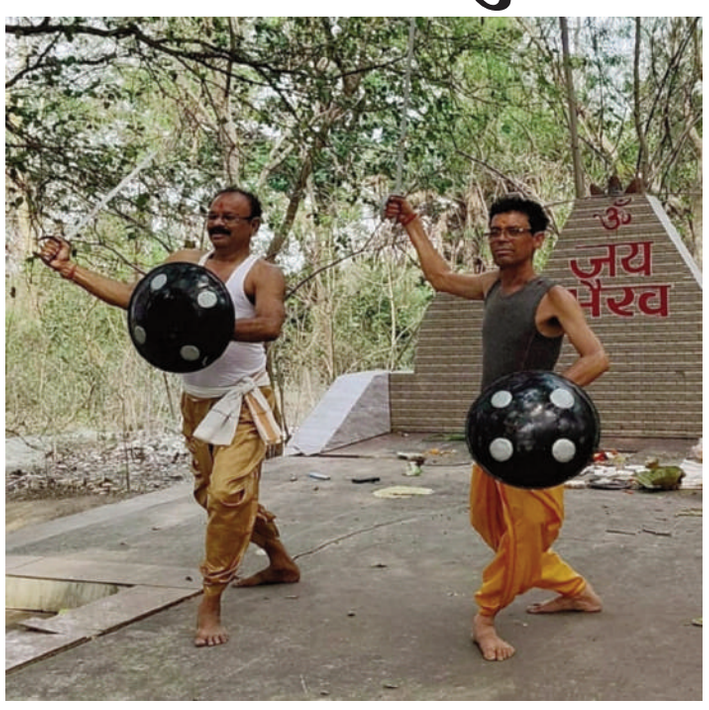

सच तो यह है कि सरायकेला स्टेट के समय एक गडबिषय का पद हुआ करता था जिसे सरकार ने राजा घर से अपना छऊ को षड्यंत्र पूर्वक लेजाकर उक्त पद को खत्म किये हुए है । जो सरायकेला मार्जार एग्रीमेंट का घोर उलंघन है अगर छऊ एवं परंपरा का कोपीराईट सरायकेला ओडिया स्टेट से जूड़ा है । गडविषय मूलत उत्कलीय क्षत्रिय खड़ायत होते । तलवारबाज कला के उस्ताद ओडिशा शाही परिवारों के शाही खंडायत सरदार यहां होते थे आज कहां किस हाल में हैं वे खोजने से इतिहास को भी नहीं मिलेगा षड्यंत्रकारियों के कारण । जिन्हे संरक्षण एवं संवर्धन देना चाहिए था Instrument of Excession of Serailkella State के तहत । इसपर केंद्र सरकार को राज्य सरकार के क्रियाकलाप पर अविलम्ब ध्यान देने की जरूरत है । पर ऐसा नहीं हो पाना घोर अन्याय है । ओडिशा में ये (जो प्रमुख बेहेरा/दलबेहेरा/पाईकराय हैं वे पाइक वीर माने जाते) । सरायकेला के अन्तिम शासक जिन्होंने अपना राज्य स्वतंत्र भारतवर्ष में सरदार पटेल के समक्ष ओडिशा में दिया उस समय एवं उनके कार्यकाल में सरायकेला के शशिभूषण दरोगा गडविषय रहे । इस पूजन कार्यक्रम का आयोजन वही कराते थे। जिनको इंग्लैंड में बैठी गोरी महारानी की सरकार The Domestic officer of Serailkella State के रूप में भली भाती जानती थी । सरायकेला जनता को हैरानी इस बात की है कि आज नतो जानकार रह गये जो इसे बता सके नाही सरकारी तंत्र में पत्रकार , लेखक । और जो रह गये सरकार उनके जरिए क्या करती जग जाहिर है । ऐसा मानना है चार करोड़ ओड़िया के बुद्धिजीवियों का विश्व भर में ।

यद्यपि सरायकेला में ओडिया संस्कृति को तहस नहस करने का सिलसिला जारी है । जिसे आम मूलवासी नागरिकों कुपित होते देखा जा सकता हैं ।

अनोजीगुड़ा स्थित पोचारम पुलिस स्टेशन C I कंनकाया गौड़ ने पद ग्रहण किया इस अवसर कोरेमुला बडेर अध्यक्ष कालुराम काग,कमल किशोर अगलेचा, दिनेश काग द्वारा राजस्थानी साफा पहनाकर, शाल व मोमेंटो द्वारा सम्मान किया।

दुकानों और कमर्शियल जगहों पर ओडिया नेमप्लेट लगाने के लिए जागरूकता वॉक निकाली गई

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: पूरे राज्य में 1 अप्रैल 'ओडिशा डे' से 14 अप्रैल 'ओडिया न्यू ईयर' तक 'ओडिया डे-2026' मनाया जा रहा है। इस मौके पर, लेबर और एम्प्लॉई स्टेट इंश्योरेंस डिपार्टमेंट की तरफ से आज सभी दुकानों और कमर्शियल जगहों पर ओडिया में नेमप्लेट साफ-साफ लगाने के लिए एक बड़ा जागरूकता कैंपेन और वॉक सफलतापूर्वक निकाली गई। लोअर PMG से लेबर ऑफिस के ऑफिस तक निकाली गई इस वॉक में 200 से ज़्यादा लोगों ने हिस्सा लिया और ओडिया भाषा को फैलाने का वादा किया।

जागरूकता वॉक का औपचारिक उद्घाटन लेबर ऑफिस के श्री इंद्रमणि त्रिपाठी ने किया। उद्घाटन समारोह में अपनी स्पीच देते हुए उन्होंने कहा कि डिपार्टमेंट के अधिकारी 4 अप्रैल से 7 अप्रैल, 2026 तक चार दिनों तक अलग-अलग दुकानों और कमर्शियल जगहों पर जाएंगे। जहां ओडिया नेमप्लेट साफ-साफ नहीं लगी हैं, वहां व्यापारियों से ओडिया नेमप्लेट साफ-साफ लिखने की रिक्वेस्ट की जाएगी। उन्होंने कहा कि हमारी भाषा हमारी पहचान और शान है, इसलिए हर बिज़नेस वाली जगह पर इसका इस्तेमाल पक्का करना हम सबकी ज़िम्मेदारी है।

इस मौके पर एडिशनल लेबर ऑफिसर मदन मोहन पैक, जॉइंट लेबर ऑफिसर विघ्नजीत महंत महापात्रा और भारती सीता, प्रबन्ध लेबर ऑफिसर बनानी महापात्रा, खोरधा प्रबन्ध लेबर ऑफिसर अजय प्रधान, डिस्ट्रिक्ट लेबर ऑफिसर प्रभाकर बिस्वाल, लेबर और एम्प्लॉई स्टेट इंश्योरेंस डिपार्टमेंट के डिप्टी एडमिनिस्ट्रेटिव सेक्रेटरी पीयूष परिदा और 'ओडिशा कल्याण' के नोडल ऑफिसर प्रीतिश पांडा मौजूद थे और उन्होंने प्रोग्राम को कंडक्ट किया।

गौरतलब है कि ओडिशा शॉप्स एंड कमर्शियल एस्टैब्लिशमेंट्स एक्ट के मुताबिक, हर बिज़नेस वाली जगह पर ओड़िया में साफ-साफ नेमप्लेट लिखना ज़रूरी नियम है। एक्ट के सेक्शन 35 के मुताबिक, अगर कोई भी जगह इस नियम को तोड़ती है, तो उसे भारी आर्थिक जुर्माना भरना पड़ेगा। नियम का पहली बार उल्लंघन करने पर 5,000 रुपये से 10,000 रुपये और दूसरी बार या उसके बाद उल्लंघन करने पर 10,000 रुपये से 20,000 रुपये तक के जुर्माने का प्रावधान है। इस जागरूकता अभियान के ज़रिए शहर के व्यापारियों को कानून के बारे में बताया गया है और उनसे ओड़िया भाषा की गरिमा की रक्षा करने का आग्रह किया गया है।

धीरे-धीरे चलती थी रेलगाडियं, पर दर्द बहुत तेज भागता था

दिल्ली विश्वविद्यालय के अदिति महाविद्यालय ने अक्षरम में प्रस्तुत किया बंटवारे का दर्द

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) : उन्होंने एक लकीर खींच दी, जल्दी में बिना सोचे समझे, न दिलों का खयाल किया, ना रिश्तों का कोई मान रखा, घर टूट गए, आंगन सूने थे, यादें साथ थी, पर दिल टूटे थे, धीरे-धीरे चलती थी रेलगाडियां, पर दर्द बहुत तेज भागता था।

विभाजन की विभिषिका को दिल्ली विश्वविद्यालय के अदिति महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने कुछ इस तरह मंच पर उतरा। महाविद्यालय ने गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में जारी अक्षरम-2026 में साहित्यकार यशपाल के उपन्यास झूठा सच पर आधारित बंटवारे का दर्द नाटक का मंचन किया। हरविंदर कौर निर्देशित यह नाटक लाहौर की गलियों से प्रारंभ होकर विभाजन के दौरान बिछड़े परिवारों, विस्थापन, सांप्रदायिकता और उस समय की वेदना का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है। इस नाटक में कलाकारों ने बंटवारे के दर्द और इंसानियत के संघर्ष को बेहद प्रभावशाली ढंग से दर्शाया।

नाटक में कलाकारों के डायलॉग पहली दरार हमेशा छोटी होती है, पर वही दरार, दीवारें गिरा देती है ने विभाजन के समय शुरू हुए झगड़ों की जड़ को रेखांखित किया। वो आंगन जहां बचपन खेला, वो चौखट जहां मां ने दीप जलाया था, वो खिड़की जिससे हर सुबह सूरज ने सपना दिखाया, सब पीछे छूट गया था एक दिन, बस आंसू संग ले जाना था, नफरत की जलती आंधियों में अपना ही घर बेगाना था, पंक्तियों से कलाकारों ने विभाजन की त्रासदी के गवाह बनने वालों के दर्द को बयां किया। अचानक खबर आई जैसे बिजली सी गिर गई, एक लकीर खींचने वाली है, धरती मां दो हिस्सों में बंट गई, ने विभाजन की पूरी वेदना बयां कर दी।

सूत्रधार निशु एवं प्रिया ने दर्शकों को कलाकारों से जोड़े देखा।

अंत में महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. नीलम राठी ने कलाकारों का परिचय करवाया जिनमें प्रतिमा ने जयदेव, अंजलि ने कनक, श्रुति ने तारा, जेएल ने मास्टर रामभुलाया, पारमिता ने अम्मा, नंदिनी ने असद व सूद, मुस्कान ने पांडे व वृद्ध पुरूष और स्त्री का किरदान निभागया। इसी प्रकार साक्षी, प्रिया, राजनंदनी, इशिका, निशा, शिवनी, रितु, प्रीति, आफरीन, शिखा, गुंजन, गौराक्षी और निशु का भी परिचय दिया। कॉलेज टीम में प्रोफेसर रजनी राठी व मंच से परे कार्य करने वालों में संतोष कुमार सिंह, रमेश मनचंदा, हरविंद्र कौर, साक्षी, वर्षा, मुस्कान, आफरीन, इशिका, निशा, प्रीति की भूमिका नाटक के मंचन में काफी सराहनीय रहती।

151 प्रतिभाएं 'कुशवासी रत्न' से सम्मानित, लोक संस्कृति और सेवा का संगम बना कुशवासी महोत्सव

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली। 4 अप्रैल। धराधाम इंटरनेशनल, क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश) एवं राजकीय बौद्ध संग्रहालय के संयुक्त तत्वावधान में भस्मा में आयोजित प्रथम कुशवासी महोत्सव 2026 के समापन दिवस पर सांस्कृतिक, सामाजिक और जनसेवा से जुड़े विविध कार्यक्रमों का भव्य आयोजन हुआ। दिनभर दर्शकों की भारी भीड़ उमड़ती रही और पूरा परिसर उत्सवमय वातावरण में सराबोर रहा।

महोत्सव में देश-विदेश से आए कलाकारों ने अपनी शानदार प्रस्तुतियों से समां बांध दिया। विशेष रूप से निशा उपाध्याय ने अपनी लोकगायन प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। वहीं डॉ .राकेश श्रीवास्तव सहित अन्य कलाकारों ने भी अपनी कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। संत सौरभ के जन्मोत्सव पर प्रस्तुत सोहर और बधाई गीतों ने कार्यक्रम को भावनात्मक ऊंचाई प्रदान की।

इस अवसर पर समाज में उत्कृष्ट योगदान देने वाली 151 विभूतियों को 'कुशवासी रत्न' सम्मान से अलंकृत किया गया, सम्मानित विभूतियों में श्री अभिमन्यु लाल श्रीवास्तव,गोरख लाल, लेखक सर्वेश कांत वर्मा, सुधीर कुमार दुबे,डॉ.निशा अग्रवाल,शिवेश्वर पांडेय, डॉ.गोविंद गुप्ता,डॉ. नीरज गुप्ता,डॉ.रत्नेश कुमार दुबे, सुनीता सिंह सरोवर, बजरंगी सहाय पाण्डेय,नीरज गुप्ता, शशांक पाण्डेय, अजय कुमार, डॉ.पी एन पाण्डेय,मनीष मिश्र, वीरेंद्र मणि त्रिपाठी, डॉ.देवेंद्र कुमार पाठक, आचार्य बृजेश कुमार पाण्डेय,डॉ.प्रशांत मिश्र, सरदार जसपाल सिंह, रीत सिंह,बंजाक्षी यम, एकता उपाध्याय, डॉ. कृष्ण कुमार पाण्डेय, डॉ.नारायण यादव , अनिल कुमार श्रीवास्तव,मुन्ना प्रसाद त्रिपाठी,राजन सिंह सूर्यवंशी,गौतम पाण्डेय सहित अन्य विशिष्ट जनों को सम्मानित किया गया।

विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति ने आयोजन को विशेष महत्व प्रदान किया।

कार्यक्रम में राजेश त्रिपाठी,चारू चौधरी, सहित अनेक विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति रही। आयोजन के संयोजक सोहार्द शिरोमणि संत डॉ.सौरभ पांडेय एवं उनकी टीम की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

महोत्सव के अंतर्गत राजकीय बौद्ध संग्रहालय की आकर्षक प्रदर्शनी ने दर्शकों को इतिहास और संस्कृति से जोड़ते हुए विशेष आकर्षण उत्पन्न किया। वहीं केशव चैरिटेबल हॉस्पिटल द्वारा आयोजित स्वास्थ्य शिविर में बड़ी संख्या में लोगों ने स्वास्थ्य जांच कराकर लाभ उठाया।

कुल मिलाकर कुशवासी महोत्सव–2026 का यह आयोजन संस्कृति, कला, सम्मान और जनसेवा का एक अद्भुत संगम बनकर उभरा, जिसने समाज में सकारात्मक ऊर्जा और एकता का संदेश प्रसारित किया।

कानपुर में नौकरी के बहाने देह व्यापार के दल - दल में ढकेली गई पश्चिम बंगाल की हसीना, यूट्यूबर गिरफ्तार ,जांच जारी

सुनील बाजपेई

कानपुर। कमसिन लड़कियों से देह व्यापार कराने में अग्रणी गिरोह ने नौकरी दिलाने के बहनपश्चिम बंगाल की एक व्यक्ति कोदेह व्यापार के दलदल में धकेल दियामामले में पुलिस ने एक यूट्यूबर को गिरफ्तार कर लिया है ,जबकि दादा के नाम से चर्चित सरगना बताए जाने वाले पश्चिम बंगाल के एक अन्य व्यक्ति समेत और भी कई लोगों की तलाश लगातार जारी है। अब तक की जांच के दौरान लगभग 20 होटल के भी नाम प्रकाश में आए हैं ,जहां लड़कियां सप्लाई की जाती थीं।

पुलिस के अनुसार युवती को 'कोलकाता के दादा' नाम से पहचान रखने वाले व्यक्ति और कानपुर निवासी रोहित वर्मा ने नौकरी का झांसा दिया था। इसके बाद भी वह पश्चिमबंगाल से कानपुर आई थी। लेकिन यहां उसे बंधक बनाकर जबरन

गलत धंधे में धकेल दिया गया। आरोप है कि उस पर लगातार दबाव बनाया जाता था और बाहर जाने की अनुमति नहीं दी जाती थी। साथ ही उसे जान से मारन की धमकी भी दी गई थी।

जानकारी के मुताबिक मामले का खुलासा तब हुआ जब युवती किसी तरह मौका पाकर आरोपियों के चंगुल से निकल गई और सीधे पुलिस आयुक्त कार्यालय पहुंचकर पूरी घटना की जानकारी दी। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस आयुक्त के निर्देश पर एडीसीपी क्राइम सुमित सुधाकर रामटेके, एडीसीपी लाइन शिवा सिंह और ट्रेनी आईपीएस सुमेध एम जाधव के नेतृत्व में टीमों का गठन किया गया। इसके बाद मौके पर पहुंचकर पुलिस ने इंदिरा नगर क्षेत्र से आरोपी रोहित वर्मा को हिरासत में लिया। वहीं, 'कोलकाता के दादा' की गिरफ्तारी के लिए एक टीम पश्चिम बंगाल रवाना की गई है। पूछताछ में आरोपी ने पहले खुद को निर्दोष बताया, लेकिन बाद में कई अहम जानकारियां दीं।

गिरफ्तार किए गए अभियुक्त के पास से पुलिस को एक न्यूज पोर्टल का आईडी कार्ड और मोबाइल नंबरों की सूची मिली है। इसके आधार पर कल्याणपुर समेत कई स्थानों पर छापेमारी की गई, जहां कुछ अनियमितताएं सामने आईं। पुलिस ने संबंधित होटलों के बुकिंग रजिस्टर और अन्य दस्तावेज कब्जे में ले लिए हैं। मामले में पुलिस की गहन छानबीन के दौरान लगभग 20 होटलों के नाम सामने आए हैं, जिनकी जांच जारी है। साथ ही अन्य पीड़िताओं और संलिप्त व्यक्तियों के संबंध में भी जानकारी जुटाई जा रही है। प्रारंभिक जांच में इस रैकेट के तार अन्य राज्यों से जुड़े होने की आशंका के आधार पर पूरे नेटवर्क की गहन जांच में लगातार जारी है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023